

फरवरी 2018

# दादावाणी

कीमत ₹ 15



जरूरत से ज्यादा जो बुद्धि है वही दखल करवाती है। बुद्धि के ऐसे फूटे हुए सभी अंकुर काटने योग्य है। ऐसे अंकुर मतलब यूजलेस, बेकार फूटे हुए जो पूरी रात सोने भी नहीं देते।

संपादक : डिम्पल मेहता

वर्ष : 13 अंक : 4

अखंड क्रमांक : 148

फरवरी 2018

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,  
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,  
पो.ओ.: अडालज,  
जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:  
8155007500

**Printed & Published by**  
**Dimple Mehta** on behalf of  
**Mahaveideh Foundation**

Simandhar City,  
Adalaj - 382421,  
Dist-Gandhinagar.

**Owned by**  
**Mahaveideh Foundation**

Simandhar City,  
Adalaj - 382421,  
Dist-Gandhinagar.

**Printed at**  
**Amba Offset**

B-99, GIDC, Sector-25,  
Gandhinagar - 382025.

**Published at**  
**Mahaveideh Foundation**

Simandhar City,  
Adalaj - 382421,  
Dist-Gandhinagar.

Total 32 pages including cover

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**

**15 साल**

भारत : 1500 रुपये

यू.एस.ए. : 150 डॉलर

यू.के. : 120 पाउन्ड

**वार्षिक**

भारत : 150 रुपये

यू.एस.ए. : 15 डॉलर

यू.के. : 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से  
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

दखल के सामने पुरुषार्थ

संपादकीय

महात्माओं को ज्ञान के बाद आत्मा की जागृति तो प्राप्त हो गई है लेकिन भरा हुआ माल तो अभी भी खाली करना बाकी है। यह भरा हुआ माल व्यवहार में दखलंदाजी करवाता है। जब तक व्यवहार में बखेड़ा रहता है, तब तक आदर्श व्यवहार नहीं कहलाता। अतः अब महात्माओं को दखलंदाजी खत्म करने का पुरुषार्थ करना बाकी है।

अब, बखेड़ा करवाने वाली बुद्धि है। दिनभर जो दखल होता है वह बुद्धि का ही सयानापन है। बुद्धि संसार के काम करने के लिए उपयोगी है लेकिन मोक्ष के लिए काम की नहीं है और जरूरत से ज्यादा बुद्धि ही बखेड़ा करवाती है इसलिए इस बुद्धि के अंकुर को काट देना चाहिए। दखल वाली बुद्धि को खत्म कर देना चाहिए। जो इमोशनल करवाती है, झूठे भय दिखाती है और चिंता करवाती है, वह बुद्धि ही है।

बुद्धि तो दखल करेगी ही लेकिन हमें जानना चाहिए कि बुद्धि यह दखल कर रही है। फिर बुद्धि से कहना कि 'तू हमें सलाह मत दे, तू अब अपने ससुराल चली जा।' इस प्रकार बुद्धि को भगा देना है। हम पर बुद्धि का नियंत्रण नहीं रहना चाहिए। बुद्धि तो हमारे लिए एक प्रकार का साधन है। यदि बुद्धि का उपयोग करना हो तो करेंगे, वर्ना कहेंगे, 'बैठ जा, चुपचाप! चुप बैठ! दखल मत करना।' जब तक हम बुद्धि की सलाह मानेंगे, उसे कीमती मानेंगे, तब तक बुद्धि का दखल रहेगा।

जैसे-जैसे आज्ञा का पालन होता जाता है, वैसे-वैसे बुद्धि की दखलंदाजी कम होती जाती है लेकिन जो पिछला ज्ञान है वह आज्ञापालन करने में दखल डालता है इसलिए हमें ऐसा निश्चय करना है कि आज्ञा में ही रहना है। पाँच आज्ञा का पालन करने से ही हमारा मोक्ष है, अन्य सब तो दखल ही कहलाता है। फिर यदि आज्ञा का पालन कम-ज्यादा हो तो उसमें हर्ज नहीं है लेकिन पाँच आज्ञा का लक्ष (जागृति) रहना चाहिए। इसके बावजूद भी यदि संसार में दखलंदाजी हो जाए तो हमें उसे 'जानना' चाहिए। दखलंदाजी को 'देखते' रहना है और जो होता है उसे 'देखते' रहना है।

बाहर की फाइलें यदि दखल करने आएँ तो उनका समभाव से निकाल कर देना है और फाइल वन के दखल तो देखने से ही चले जाएँगे। उदयकर्म के अधीन जो दखल होता है उसे हम देखेंगे और जानेंगे तो हम छूट जाएँगे। यह तो, खुद को समझ में नहीं आने के कारण, खुद का व्यक्तित्व छोड़ देने के कारण, दखल होने से बखेड़ा हो जाता है। परम पूज्य दादाश्री कहते हैं कि अगर ज्ञान में रह कर आत्मदृष्टि से सब 'देखा' ही करे, किसी में दखल न करे तो एक अवतार में ही मोक्ष में जा सकेंगे, ऐसा यह ज्ञान है।

प्रस्तुत अंक में, दखलंदाजी के सामने कैसा पुरुषार्थ करना चाहिए, उसका संकलन दादाश्री की वाणी में से किया गया है। जो कि महात्माओं को दखलंदाजी रहित स्थिति प्राप्त करने में उपयोगी सिद्ध होगा।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

दखल के सामने पुरुषार्थ

दखल रहित व्यवहार, आज्ञा द्वारा

तेरा व्यवहार कैसा रखना चाहता है?

प्रश्नकर्ता : संपूर्ण आदर्श।

दादाश्री : बूढ़ा होने के बाद आदर्श व्यवहार हो, वह किस काम का? आदर्श व्यवहार तो जीवन की शुरुआत से होना चाहिए।

‘वर्ल्ड’ में एक ही मनुष्य आदर्श व्यवहार वाला हो तो उससे पूरा ‘वर्ल्ड’ बदल जाए, ऐसा है।

प्रश्नकर्ता : आदर्श व्यवहार किस तरह होता है?

दादाश्री : आपको (महात्माओं को) जो निर्विकल्प पद प्राप्त हुआ है तो उसमें रहने से आदर्श व्यवहार अपने आप आएगा। निर्विकल्प पद प्राप्त होने के बाद कोई भी दखल नहीं होता है फिर भी आपसे दखल हो जाए तो आप मेरी आज्ञा में नहीं हो, हमारी पाँच आज्ञा आपको भगवान महावीर जैसी स्थिति में रखें, ऐसी हैं। व्यवहार में हमारी आज्ञा आपको बाधक नहीं है, आदर्श व्यवहार में रखें, ऐसी हैं। ‘यह’ ज्ञान तो व्यवहार को कम्प्लीट (संपूर्ण) आदर्श बनाए, ऐसा है। मोक्ष किसका होगा? आदर्श व्यवहार वाले का।

भगवान इतना ही कहते हैं कि व्यवहार ऐसा होना चाहिए ताकि व्यवहार में हम किसी के लिए बाधक न हों। व्यवहार को लोगों ने रियल माना

है फिर भी व्यवहार करना नहीं आया। व्यवहार के पक्ष में हैं फिर भी व्यवहार पूरा शुद्ध नहीं हुआ है। व्यवहार कैसा होना चाहिए? आदर्श होना चाहिए। लोगों को ऐसा लगना चाहिए कि ‘कहना पड़ेगा’! यह तो, घर-घर में बखेड़े होते रहते हैं। बखेड़ा हो, उसे (आदर्श) व्यवहार कैसे कह सकते हैं?

बुद्धि के सयानेपन से होती है दखलंदाजी

एक भाई तो बहुत बुद्धिमान थे तो मैंने उनसे यों ही पूछा कि ‘घर में कोई क्लेश होता है?’ तो कहा, ‘सिर्फ क्लेश ही नहीं लेकिन घर में बैठना भी अच्छा नहीं लगता,’ मैंने कहा, ‘इतने बुद्धिमान हो तो बुद्धि कहाँ गिरवी रख कर आए हो या फिर क्या किया है?’ बुद्धिमान तो समझदारी से रास्ता ढूँढ निकालते हैं। कल यदि पत्नी सामने बोली हो तो उसका उपाय खोज निकालते हैं फिर दोबारा अटैक नहीं करते। खोज निकालते हैं कि अटैक कैसे बंद हो। पलट कर अटैक करके फिर से नई लड़ाई शुरू नहीं करते। वह ऐसा नहीं करता कि ‘यदि फिर से वह अटैक करेगी तो आखिर में लगा ही दूँगा!’ पुरुषों का स्त्री के सामने अटैक करना भयंकर गुनाह है!

मोक्ष जाने में बुद्धि दखल डालती है जबकि संसार में बुद्धि उसे हेल्प करती है लेकिन नॉर्मैलिटी वाली बुद्धि होनी चाहिए। जिनमें ज़रूरत से ज्यादा बुद्धि होती है न, उनकी पत्नी तो कहती है,

‘दिनभर झगड़ते ही रहते हैं।’ अधिक बुद्धिमान हमेशा झगड़ा ही किया करते हैं इसलिए ज्यादा बुद्धिमान के साथ तो बेटियों को शादी ही नहीं करनी चाहिए, ऐसों को कुंवारा रखना ही अच्छा है।

अब वास्तव में बुद्धिमान तो किसे कहेंगे? जो झगड़ा बंद कर दें। झगड़ा होने की जगह पर झगड़ा बंद करता जाए। इसीलिए हमें पक्का कहा है न! हम चाहे कैसी भी आफत में फँस जाएँ, फिर भी *निकाल* (निपटारा) कर देते हैं।

उनका व्यवहार इतना अच्छा होता है कि किसी भी व्यक्ति के लिए वे पीड़ादायक नहीं बनते। यदि किसी को पीड़ा हो जाए तो उसका भी निबेड़ा ला देते हैं, वे कहलाते हैं बुद्धिमान।

बुद्धि तो किसे कहेंगे कि जो एक भी मतभेद नहीं होने दें। यदि दूध ढुल जाए तो क्यों ढुल गया, अपने एक्सपिरियन्स (अनुभव) से तुरंत ही उसका पूरा निबेड़ा ला देते हैं और तुरंत कहते हैं, ‘ढुल गया है तो कोई हर्ज नहीं है। अब धीरे से पोंछ लो और दूसरा दूध लाकर चाय बनाओ’ ऐसे धीरे से बोलते हैं। जबकि ये तो दूध ढुलने से पहले ही, भीतर उनमें भी दूध ढुल जाता है! पूरे दिन खटपट होती है, वह बुद्धि का ही सयानापन है न!

### बुद्धि के अंकुरण से होता है, बखेड़ा

यह जो बुद्धि है, वह ठीक है, अच्छी है लेकिन उसके उगे हुए सभी अंकुरों को काट देना चाहिए। अंकुर अर्थात् यूजलेस, बेकार ही उग गए और जो पूरी रात सोने भी नहीं देते। इस बुद्धि का बखेड़ा घुस जाता है। एक व्यक्ति की बुद्धि का उपयोग होता है तो फिर दूसरे की बुद्धि का उपयोग भी होता ही है। एक व्यक्ति बुद्धि का उपयोग करे तो दूसरे पर उसका असर

होता रहता है। तू ऐसा कुछ कर ताकि तेरा असर दूसरे पर ना पड़े।

**प्रश्नकर्ता :** उसमें तो आपकी कृपा और मेरे पुरुषार्थ की जरूरत है।

**दादाश्री :** तेरा पुरुषार्थ, और हम कृपा उतार देंगे। उसके बाद बुद्धि का सारा बखेड़ा बंद हो जाएगा लेकिन तुझे एक बात याद रखनी पड़ेगी कि हुआ सो करेक्ट। ऐसे करके तू चलने लग ताकि फिर बुद्धि कसरत करके मजबूत न हो। नहीं तो बुद्धि पूरी रात कसरत करके, मजबूत होकर फिर दूसरे दिन लड़ेगी।

**प्रश्नकर्ता :** मुझे न्याय ढूँढने की बहुत आदत है।

**दादाश्री :** इसीलिए तो तुझ से यह बखेड़ा हो जाता है तू इतना ही कर न, फिर अपने आप ही सब ठीक हो जाएगा।

### पहचान लो अपने और परायों को

**प्रश्नकर्ता :** जो विपरीत बुद्धि घुस गई है न, वह नेगेटिव थॉट्स (विचार) भी लाती है और इमोशनल (भावुक) भी करवा देती है।

**दादाश्री :** हाँ! इसलिए हम कहते हैं न, ‘बैठ-बैठ। तू हमें सलाह मत दे। तेरी सलाह मानकर तो संसार में साधु बने, संसार में भी चैन से नहीं बैठने दिया।’

**प्रश्नकर्ता :** अभी भी विपरीत बुद्धि का बखेड़ा क्यों चलता रहता है?

**दादाश्री :** वह तो चलता ही रहेगा न! जब तक उसकी सत्ता है, तब तक। अब भीतर ‘दादा के वहाँ चलो’ कहे, तब उसे पहचानेंगे या नहीं कि यह कौन है? क्या उसे पराया कहेंगे? नहीं। वे अपने हैं और दूसरे भी हैं भीतर। जब तरह-

तरह की सलाह देने लगे तब हमें तैयार रहना है कि यह कौन आया? 'यह किसकी सलाह है,' उसे पहचान जाएँगे न?

### बुद्धि की हरकतों को समझो गलत

अपना तो यह आत्मज्ञान है, कोई ऐसी-वैसी चीज़ नहीं है! यह तो गज़ब की चीज़ प्राप्त हुई है आपको! और ये जो सारे भाव आते हैं न, मन के भाव, बुद्धि के भाव, वे सभी भाव सिर्फ भयभीत ही करेंगे। एक बार समझ जाना है कि ये सिर्फ भयभीत करने वाले लोग हैं और जब तक बुद्धि का उपयोग होता रहेगा, तब तक वह दखल करती ही रहेगी। आपकी बुद्धि दखल करती है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** कभी-कभी खड़ी हो जाती है, उल्टी खड़ी हो जाती है।

**दादाश्री :** लेकिन वह गलत चीज़ है, उतना तो आप समझ गए हो न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, उतना तो समझ में आता है।

**दादाश्री :** वह गलत चीज़ है और जो भी नखरे करती है, वे सब गलत हैं, वह सब समझ में आ गया है न? वह सही चीज़ नहीं है, ऐसा समझ में आ गया है न? हाँ, यह सब समझ ले तो आत्मा की तरफ जाने के प्रयत्न रहेंगे ही। फिर भी बुद्धि का बहुत जोर हो तो हिल जाते हैं।

### दखल वाली बुद्धि को पहचानेंगे कैसे?

**प्रश्नकर्ता :** मेरी प्रॉब्लम कुछ अलग तरह की हैं। बुद्धि एक चीज़ बताती है कि काम इतना खराब चल रहा है, ऐसा करो वर्ना वैसा हो जाएगा। उस समय मेरे पास दो ऑल्टरनेट (विकल्प) होते हैं। या तो बुद्धि के बताए अनुसार करने का प्रयत्न करना या फिर यह बुद्धि का बखेड़ा है, ऐसा करके मुझे बैठ जाना है तो इसमें समझ में कैसे आएगा कि यह दखल है या सही क्या है?

**दादाश्री :** हम ऐसा तय करते हैं कि बारह बजे से दो बजे तक मुझे आराम करना है। आराम करने के बाद मुझे बाहर जाना है। अगर दो बजे आने वाली बुद्धि दो बजे से पहले, एक बजे ही आ जाए तो हम समझ नहीं जाएँगे कि यह बेकार ही यहाँ पर दखल दे रही है। टाइम तय करने के बावजूद भी जो बीच में आए, वह गलत बुद्धि है।

फिर दो बजे, टाइम होने के बाद आए तो फिर हमें उससे पूछना है कि 'आप सही हो या गलत?' सही हो तो मुझे फल दिखाओ।' फल दिखाए वह सही है और बेकार में किच-किच करे वह गलत। बेकार में परेशान करती रहती है और काम तो होना ही है, टाइम आने पर अवश्य होना ही है। सभी चीज़ें हो ही जाएँगी। आपको बुलाने नहीं जाना पड़ेगा कि 'चलो बहन'। अपने आप ही आकर खड़ी रहेगी, अगर आपकी अनबन हो गई होगी तो यों अकड़ कर आएगी लेकिन आए बगैर रहेगी नहीं क्योंकि उसमें हस्ताक्षर किए बगैर कार्य नहीं हो पाएगा।

### ज्ञानप्रकाश बढ़ेगा, तभी बुद्धि घटेगी

ज्ञानप्रकाश बढ़ेगा तभी बुद्धि घटेगी, वर्ना अगर ज्ञानप्रकाश नहीं होगा तो बुद्धि कम नहीं होगी।

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञानप्रकाश होने के बाद भी बुद्धि तो चाहिए न?

**दादाश्री :** नहीं! ज्ञानप्रकाश में सब पता चल जाता है। इस प्रकाश से तो सबकुछ दिखाई देता है, क्लियर (स्पष्ट)। फिर भी हमें इस संसार को जितना चलाना है, निमित्त में आया है, उसमें यह लाइट नहीं चलेगी। उसमें तो वह बुद्धि की जो लाइट है वह उसके साथ ही रहती है। बुद्धि की लाइट, डिम लाइट प्रत्येक कार्य में उसके साथ ही रहती है। जितनी जरूरी है, वह बुद्धि तो मुझ

में भी रहेगी। गैरज़रूरी बुद्धि कौन सी है? जो आपको ऐसा दिखाए कि 'ऐसा हो जाएगा, वैसा हो जाएगा,' सब उल्टा-सीधा बताती रहे, दखल डालती है। इमोशनल कर देती है या नहीं? उस बुद्धि को कम करने के लिए कह रहा हूँ। ज़रूरत लायक बुद्धि तो अपने आप कुदरती रूप से आ ही जाएगी। उसके साथ ही रहेगी, डिम लाइट तो है ही न! संसार चलाने के लिए फुल लाइट की ज़रूरत ही नहीं है।

### बुद्धि के उपयोग की लिमिट

हम सुबह सात बजे 'दादर' स्टेशन पर बैठे हुए थे, तब लोगों ने एक साथ सभी लाइटें बंद कर दीं तो बुद्धि वाला क्या पूछता है कि, 'ऐसा क्यों किया?' 'ये सूर्यनारायण उग रहे हैं उनका प्रकाश आ रहा है इसलिए अब इन लाइटों की क्या ज़रूरत है? हम कहते हैं कि 'इस' फुल लाइट के आ जाने के बाद फिर बुद्धि की लाइट बंद कर दो! जैसे ये लोग इसमें कितने जागृत हैं कि 'इसमें इलेक्ट्रिसिटी खर्च हो जाती है,' उसी तरह अपनी लाइट में, मूल शक्ति में बुद्धि का उपयोग करने से पावर व्यर्थ खर्च हो जाता है और यदि इस लाइट का उपयोग नहीं करें तो मूल लाइट में वृद्धि होगी।

**प्रश्नकर्ता :** बुद्धि का प्रकाश तो रहेगा ही न?

**दादाश्री :** हाँ, ज़रूरत पड़ने पर बुद्धि काम कर जाती है लेकिन (उसका) बटन दबाए रखने की ज़रूरत नहीं है। वह तो ऑटोमैटिक शुरू हो ही जाती है लेकिन बटन दबाया हुआ नहीं रहना चाहिए। बुद्धि यही दिखाती है कि सांसारिक हित किसमें है। किसी भी सांसारिक क्रिया में बुद्धि का ही उपयोग होता है और 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' वह ज्ञान का उपयोग है।

हम पर बुद्धि का नियंत्रण नहीं रहना चाहिए। बुद्धि तो हमारे लिए एक प्रकार का साधन है। अगर इसका उपयोग करना हो तो उपयोग करेंगे, वर्ना कहेंगे, 'सीधी तरह बैठ जा चुपचाप! दखल मत कर।' वह तो नियंत्रण में ही रहती है। बुद्धि तो कहेगी, 'नुकसान हो गया,' लेकिन हमें क्यों मानना है? बुद्धि तो सांसारिक नुकसान को 'नुकसान' कहती है और अपना यह ज्ञान सांसारिक नुकसान को 'फायदा' कहता है। उसे हम 'ज्ञान' से देखेंगे तो पता चलेगा।

### ज्ञान के बाद भी रहे हुए हैं, बुद्धि के बखेड़े

**प्रश्नकर्ता :** अभी तक बुद्धि से ही चलाया है इसलिए बुद्धि पर मोह हो गया है कि यह सही है, बुद्धि ही सही है।

**दादाश्री :** ऐसा? लेकिन कोई कभी ऐसा मानता ही नहीं है न कि 'बुद्धि गलत है'! वैसा मानेगा ही नहीं लेकिन अभी भी यह सब जो चिपका हुआ माल है न, जब तक वह नहीं उखड़ जाता तब तक फिर बुद्धि ही उखाड़ेगी न! पहले बुद्धि से उखाड़ता है और बाद में हमें ज्ञान से उखाड़ना है।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् बुद्धि सम्यक् हो जाए तो फिर उखाड़ती जाएगी न?

**दादाश्री :** सम्यक् बुद्धि तो वापस नया लेने के लिए है। यह जो पुरानी बुद्धि है न, वह हमें क्या दिखाती है कि कोई अगर यहाँ पर दूध ढोल दे तो 'यह नुकसान हो गया!' तब हमें कहना है कि, 'इसे ऐसे बचाना था न'। अब, जब बुद्धि ऐसा कहे तब वहाँ अपना ज्ञान क्या करेगा? 'ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है।' यानी वह बुद्धि अपना रोल अदा कर लेगी, उसके बाद साफ हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** यानी यह बुद्धि अपना रोल अदा किए बगैर रहेगी ही नहीं?

**दादाश्री :** वह तो रोल अदा करेगी न!

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् हम जब आमने-सामने ज्ञान से उसे क्लियर कर लेंगे, तभी वह अपना रोल अदा किए बगैर खत्म होगी, दादा?

**दादाश्री :** नहीं, नहीं, वह तो रोल अदा करेगी ही न!

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञान के परिणामित होने के बाद भी क्या बुद्धि ऐसा बखेड़ा करती है?

**दादाश्री :** बखेड़ा करती है और दूसरी तरफ ज्ञान साफ करता जाता है। बुद्धि बखेड़ा करती है और जो साफ हो जाए वह अपना। जितना बखेड़ा किया, वह गया। जो बखेड़ा किया था, वह चला गया। जब तक बुद्धि का उपयोग होता रहेगा, तब तक बखेड़ा करती ही रहेगी। बखेड़े किए बगैर रहेगी नहीं न!

**खत्म कर देना, दखल वाली बुद्धि को**

आपकी बुद्धि बखेड़ा करती है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, बुद्धि का बहुत बखेड़ा रहता है कि ऐसा हो जाएगा, वैसा हो जाएगा। दिन भर बुद्धि के बखेड़े चलते ही रहते हैं।

**दादाश्री :** हाँ, 'क्या हो जाएगा? यह कारखाना इसी तरह चल रहा है। नुकसान नहीं हो रहा, सभी भाई जीवित हैं। क्या हो जाएगा? कुछ भी नहीं होगा,' हमें ऐसा कहना है।

**प्रश्नकर्ता :** वह बात करेक्ट है दादा, फिर भी बुद्धि खुद का कुछ ले आती है। इतने छोटे से को इतना बड़ा करके दिखाती है।

**दादाश्री :** हाँ, वह अपना ले आए तो फिर हमें उसका क्या करना है? बुद्धि से दोस्ती करनी है?

**प्रश्नकर्ता :** खत्म कर देना है उसे।

**दादाश्री :** हाँ, खत्म कर देना है। 'इतना जवान आदमी है तू!'

मंदी आएगी तब, 'क्या होगा, क्या होगा?' अरे, क्या होगा? दुनिया तो ऐसी ही रही है। क्या हो जाएगा? हम तो जीवित ही रहेंगे। यह स्टीमर वहाँ इंग्लैन्ड से निकलता है तो यहाँ तक अच्छी तरह से आ जाता है और अगर रास्ते में तीन बार हिल जाए तो 'क्या होगा, क्या होगा?' अरे, भाई, अभी चलने लगेगा वह तो! खा पी कर, नाश्ता करके भगवान का नाम लो। अंतर में स्टीमर डूब जाता है या नहीं!' अब उस समय यह कौन सिखाता है कि 'क्या होगा, क्या होगा, क्या होगा?' बुद्धि अकुलाहट करवाती है, बुद्धि परेशान करती रहती है। 'क्या होगा, क्या होगा?' अरे, क्या होना है? या तो डूब जाएगा या फिर तैरेगा। दो में से एक ही होगा। तो फिर भगवान का नाम लो न चुपचाप! दो के अलावा तीसरा क्या होना है?'

**पहचानो, दखल करवाने वाली बुद्धि को**

**प्रश्नकर्ता :** इस ज़माने में बुद्धि ही परेशान करती है न? वही बखेड़ा करवाती है न?

**दादाश्री :** हाँ, बुद्धि बखेड़ा करवाती है लेकिन हमें बुद्धि को पहचानना चाहिए कि, 'बुद्धि बहन, अब आप जाओ न', कहना। आप यहाँ मायके में ही कब तक पड़ी रहोगी? अपने ससुराल जाओ। बारह महीने में हजार रुपए भेज दूँगा। उसे भेजेंगे तो वह जाएगी न? उसे बुलाना ही नहीं पड़ता। उसे हम मज़बूत करेंगे तो वह चढ़ बैठेगी न? बुद्धि को मज़बूत करने वाले हम ही हैं न? बुद्धि है तब तक अपनी तरह से बखेड़ा करती ही रहेगी न!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन बखेड़ा करने से बिगड़ता ही है न?



**दादाश्री :** उसमें क्या बिगड़ता है, वह सब हमें देखते रहना है। उसे जो भी दखल करनी हो वह करे, उससे हमें क्या लेना है? उसे देखना है या हमें भी उसमें घुस जाना है? हमें देखते रहना है।

**जानो, बुद्धि के दखलों को**

**प्रश्नकर्ता :** यह तो पता चल रहा है। दादाजी जो कहना चाहते हैं, वह समझ में आ रहा है लेकिन फिर बुद्धि इतना ज्यादा तूफान मचा देती है कि....

**दादाश्री :** बुद्धि अगर तूफान मचाए तो तूफान! हम जान जाते हैं न कि बुद्धि तूफान मचा रही है!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन उस जानपने में रह नहीं पाते हैं, वहाँ फिसल जाते हैं।

**दादाश्री :** वहाँ फिसलते नहीं हो। वह तो, ऐसा लगता है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन ऐसा लगता है। यों आपकी तरह नहीं बन सकते।

**दादाश्री :** बुद्धि दखल करती जरूर है लेकिन बुद्धि को जानना चाहिए कि यह बुद्धि का दखल है। क्या हम ऐसा नहीं समझ जाते? जैसे अपने घर में कोई बहन आए, एक बच्चा और एक बच्ची हो तो हम नहीं समझ जाएँगे कि यह बहन दखल कर रही है? हमें तो दखल को सिर्फ जानना चाहिए और कुछ नहीं। दखल किसका है, क्या हमें पता नहीं चलता?

**प्रश्नकर्ता :** बाद में ध्यान आ जाता है।

**दादाश्री :** वह तो आ जाता है। इसलिए तो ऐसा कुछ भी नहीं है। आप दखल को दखल रूप में जानोगे न तो फिर कुछ भी नहीं।

**बुद्धि की सलाह मानने से, होती है दखलंदाजी**

**प्रश्नकर्ता :** बुद्धि अभी भी दखलंदाजी करती है तो क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** बुद्धि अगर इस तरफ दखलंदाजी करने लगे तो हमें वहाँ से दृष्टि को घुमा देनी है। जैसे अगर हमें रास्ते में कोई नापसंद व्यक्ति मिल जाए तो ऐसे मुँह मोड़ लेते हैं या नहीं? वैसे ही अपने में यह दखलंदाजी करती है, उससे विपरीत दिशा में देखना। दखलंदाजी कौन करता है? बुद्धि! बुद्धि का स्वभाव क्या है, कि संसार से बाहर निकलने ही नहीं देती!

**प्रश्नकर्ता :** बुद्धि समाप्त कब होती है?

**दादाश्री :** आप उसकी तरफ बार-बार नहीं देखोगे, दृष्टि दूसरी तरफ रखोगे तो फिर वह समझ जाएगी, वह अपने आप ही बंद हो जाएगी। अगर आप उसे बहुत मान दोगे, उसका कहा 'एक्सेप्ट' करोगे, उसकी सलाह मानोगे तब तक वह दखलंदाजी करती रहेगी।

**कीमती मानोगे, तभी तक रहेंगे बुद्धि के दखल**

**प्रश्नकर्ता :** बुद्धि का दखल होता है, तब हमें पता चलता है, कि बुद्धि ने यह दखल किया। वह कौन बताता है? शुद्धात्मा बताता है या प्रज्ञाशक्ति बताती है?

**दादाश्री :** शुद्धात्मा तो काम करता ही नहीं। प्रज्ञाशक्ति ही बताती है। शुद्धात्मा के बजाय उसके प्रतिनिधि के रूप में प्रज्ञाशक्ति ही काम करती है और वह सब बताती है और वह तो बल्कि अगर आप उस तरफ जा रहे हों न तो वापस खींच कर यों फिर आत्मा की तरफ ले आती है। बुद्धि को अज्ञा कहा जाता है। उस अज्ञा का काम क्या है? 'ये मोक्ष में न चले जाएँ', इसलिए वह इसी तरफ खींचती रहती है। प्रज्ञा और अज्ञा, यह झंझट



इन दोनों की है और अगर हम अज्ञा में एकाकार हो जाएँ तो फिर हो जाता है अज्ञा का काम! फिर वह खुश हो जाती है। तब फिर प्रज्ञा थक जाती है। अगर मूल मालिक ही उसमें एकाकार हो जाए तो फिर क्या हो सकता है!

**प्रश्नकर्ता :** दादा, यह बुद्धि कब तक दखल करेगी इस तरह से?

**दादाश्री :** जब तक उसे कीमती माना है तब तक। पड़ोस में एक पागल इंसान रहता हो, पाँच गालियाँ दे कर चला भी जाता है रोज़, जब वह गालियाँ देने आता है तब हम समझ जाते हैं कि यह पागल आया। हम चाय पीते रहते हैं और वह गालियाँ देता रहता है। इसी प्रकार से भले ही बुद्धि आए और जाए, हमें अपने में रहना है। बाकी का सब जो है वह पूरण-गलन (भरना-खाली होना) है। आप नहीं कहोगे तब भी अलग रहेगा और अगर आप कहोगे तो भी आए बगैर रहेगा नहीं।

**सावधान हो जाओ! बुद्धि की सुनने से पहले**

**प्रश्नकर्ता :** क्या आप ऐसा कहना चाहते हैं कि जब यह बुद्धि दखल कर रही हो, तब हमें उसकी नहीं सुननी चाहिए?

**दादाश्री :** नहीं सुनो तो बहुत अच्छा लेकिन सुने बगैर रहोगे ही नहीं न आप। अगर कहें कि आप मत सुनना तो भी आप सुने बगैर रहोगे नहीं न! मोक्ष में जाना हो तो बुद्धि की ज़रूरत नहीं है, संसार में भटकना हो तो बुद्धि की ज़रूरत है। जिसने ऐसा सब नहीं पढ़ा हो और ब्लैन्क पेपर (कोरा कागज़) हो न तो उसे तो बस 'यह चंदूभाई और यह मैं', बस! हो गया बहुत अच्छा। अर्थात् यह सारा डिस्चार्ज है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, हमें पता चलता है कि

यह बुद्धि दखल कर रही है, फिर भी अगर हम बुद्धि का सुनें तो उसे क्या कहेंगे?

**दादाश्री :** वह तो इसलिए कि अभी तक बुद्धि का सुनने में इन्टरेस्ट है लेकिन फिर भी यह जो प्रज्ञाशक्ति है, वह उसे उसी तरफ खींचती है।

**प्रश्नकर्ता :** हमें पता चलता है कि बुद्धि दखल कर रही है फिर भी हम बुद्धि का सुनते रहते हैं। उसे टेढ़ापन कहा जाएगा न?

**दादाश्री :** यदि सुनते रहें लेकिन उस पर अमल न करें तो हर्ज नहीं है। बाकी, देखते ही रहना चाहिए कि बुद्धि क्या कर रही है! अपने स्वभाव में रहें तो झंझट नहीं है। आपमें बुद्धि ज़्यादा है लेकिन दादा की कृपा प्राप्त हो चुकी है इसलिए परेशानी नहीं होगी।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, मेरी बुद्धि बहुत चलती है लेकिन फिर उसे ज़रा शांत कर देता हूँ। अब मैं उसकी नहीं सुनता हूँ।

**दादाश्री :** उसे छूने ही मत दो। हमारी बुद्धि चली गई है तभी यह झंझट गई न! स्वतंत्र! कोई कुछ भी दखल ही नहीं करता न फिर!

**आज्ञापालन करने से, घटता है बुद्धि का दखल**

**प्रश्नकर्ता :** यह ज्ञान लेने के बाद भी यह जो बुद्धि बीच में आती रहती है, तो अब ज्ञान लेने के बाद बुद्धि बीच में नहीं आनी चाहिए न? जहाँ बुद्धि है वहाँ ज्ञान नहीं रह सकता तो ऐसा क्यों होता रहता है?

**दादाश्री :** नहीं! लेकिन यह जो होता रहता है न, वह तो आपकी पहले की आदत है इसलिए बुद्धि का दुरुपयोग होता है। इसीलिए हम ने आज्ञा दी है न! यदि आज्ञा में रहोगे तो बुद्धि का दुरुपयोग नहीं होगा लेकिन आपको पहले की आदत है न, वह आदत अभी भी जाती नहीं है।

अतः आदत के कारण ऐसा सब दिखाई देता है। उस आदत को जाने में कुछ साल लगेंगे। अगर बुद्धि खत्म हो गई न, तो फिर यह डिस्चार्ज अहंकार, भी खत्म हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** जब तक वह डिस्चार्ज अहंकार है, तब तक बुद्धि के पर्याय भी रहेंगे तो सही न!

**दादाश्री :** रहेंगे न! लेकिन जब वह डिस्चार्ज अहंकार एक स्टेज तक पहुँचेगा, तब वह बुद्धि जाने के बराबर ही कहा जाएगा। अर्थात् जब तक यह हायर स्टेज में है, तब तक कम होती जाएगी और फिर ठीक हो जाएगा। फिर आपको ऐसा नहीं लगेगा, कि मुझ में बुद्धि है।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् जैसे-जैसे हम आज्ञा में रहते जाएँगे, वैसे-वैसे बखेड़ा कम होता जाएगा ?

**दादाश्री :** फिर बखेड़ा करेगी ही नहीं। बुद्धि को छोड़ो न! बन जाओ शुद्धात्मा, मैं शुद्धात्मा हूँ! आज्ञा ही धर्म और आज्ञा ही तप है लेकिन वह बखेड़ा किए बगैर रहती ही नहीं न! अनादि से यह आदत पड़ी हुई है।

यह बखेड़ा बुद्धि के कारण है। बुद्धि की ज़रूरत कब तक है? जब तक ज्ञान न मिले। ज्ञान मिलने के बाद फिर बुद्धि की ज़रूरत नहीं रहती। बुद्धि तो हमेशा अपने आप घुस जाती है। बुद्धि उसे जीने ही नहीं देती।

### आज्ञापालन से बरतती है, समाधि

ज्ञान लेने के बाद ज्ञानीपुरुष की पाँच आज्ञा में रहना होगा। पाँच आज्ञा का पालन करने से तो निरंतर समाधि रहती है! हम गारन्टी बॉन्ड लिख कर देते हैं। आज्ञा का थोड़ा बहुत पालन होता है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** पालन होता है।

**दादाश्री :** सभी आज्ञापालन करोगे, तब कल्याण होगा। कितनी पालन की तूने?

**प्रश्नकर्ता :** जैसे-जैसे याद आता है, वैसे-वैसे पालन करता हूँ, दादा।

**दादाश्री :** याद आए तब? पाँच आज्ञा का जोर-शोर से पालन करो। अभी भी कुछ समय और जी सकते हैं, करो न कुछ, बाद में जब जिंदा नहीं रहोगे, तब क्या करोगे? देह का क्या भरोसा? कौन बचाएगा? पाँच आज्ञा का पालन नहीं हुआ तो यह ज्ञान भी चला जाएगा और मोक्ष भी चला जाएगा, इसी धांधली और हलचल में। आज्ञापालन किए बिना कुछ नहीं बदलेगा। यह कोई गप्प है क्या? यह तो विज्ञान है।

एक आदमी सात साल से घर चलाता है। खेती करता है, गाये-भैंसे पालता है। उसने कुछ दिन पहले बेटी की शादी की। सभी महात्माओं को बुलाया था। उसने मुझ से कहा है, 'दादा के ज्ञान की वजह से सात साल से एक मिनट के लिए भी असमाधि नहीं हुई है। अकाल पड़ने पर भी असमाधि नहीं हुई, बहुतायत हो तब भी असमाधि नहीं हुई।' 'इसका क्या कारण है?' किसी ने पूछा, तो ऐसा कहा, दादा ने पाँच आज्ञा दी हैं, उसकी वजह से। कहीं भी, नाम मात्र भी दखल नहीं करता हूँ। पाँच आज्ञा में ही रहता हूँ। मैं और कुछ नहीं जानता। कितना सुंदर विज्ञान है!

आज्ञा में रहने से यह संसार का काम निपटता रहता है, बेटियों की शादी होती हैं, बेटे की शादी होती है। आज्ञा में रहने से, सबकुछ अपने आप ही होता रहता है, सहज रूप से होता रहता है।

यह तो बल्कि दही में हाथ डाल कर बखेड़ा करता है। हम कहें कि 'रातभर सोते रहना, दही को देखने मत जाना।' फिर भी जब वह दो बजे उठता है न तो कहता है 'ज़रा देख लूँ', थोड़ा

जमा या नहीं? तो सुबह बखेड़ा हो जाता है। दही ठीक तरह से नहीं जमता। वर्ना, यह तो विज्ञान है। तुरंत फल देता है! आज्ञा में ही रहना है।

**पिछला ज्ञान करवाता है दखल, आज्ञापालन में**

इसलिए आप जरा ठीक से समझ लेना। बहुत उलझन भरा सवाल लाओ और अपने आप समाधान करने लगो तो क्या होगा? वर्ना यदि ज्ञानीपुरुष की आज्ञा में रहे न तो अभी ही समाधि रहेगी। अर्थात् आज्ञा में रह नहीं पाता न? आज्ञा में रहे कैसे? पिछला ज्ञान उसे उलझा देता है न! यदि पिछला सारा ज्ञान फ्रैक्चर कर दिया हो तो कोई भी बखेड़ा नहीं होगा।

हम ने जो आज्ञा दी हैं न, अगर उन आज्ञाओं में रहे न तो ऐसा है कि निरंतर समाधि रहेगी। ये आज्ञा कठिन भी नहीं हैं। उनमें कुछ विरोधाभास लगता है, क्या? अपने यहाँ तो जिसका कागज़ कोरा हो, उसका जल्दी हल आ जाता है। और इन्होंने तो फिर पुस्तकें पढ़ी थी, यदि पुस्तकें नहीं पढ़ी होतीं तो बहुत उच्च दशा होती। वे पुस्तकें ही फिर रुकावट डालती हैं।

हम ने तो यहाँ बहुत लोगों को ज्ञान दिया है, वे निरंतर समाधि में ही रहते हैं क्योंकि दखल नहीं है न! उन्होंने स्वीकार किया कि जिन बातों को हम सच मानते थे, वे सारी बातें दादाजी के कहे अनुसार गलत निकलीं। इसलिए उन्हें एक तरफ रख दो। जो कुछ भी नहीं समझता है, उसका यहाँ जल्दी हल आ जाता है।

यदि समझ में नहीं आए तो फिर सब से अच्छा है शरणागति कि 'जो दादा का हो, वही मेरा हो।' दादा के कहे अनुसार रहना है। वे कहें, कि 'खड़ा हो जा,' तो खड़े हो जाना। वे कहें कि 'शादी मत करना' तब कहना, 'शादी नहीं करूँगा।' वे कहें कि, 'दो से शादी कर।' तब

कहना, 'दो से शादी करूँगा।' वहाँ ऐसा बखेड़ा मत करना कि, 'साहब, शास्त्रों में मना किया गया है और आप दो से शादी करने के लिए कह रहे हैं?' तो मोक्ष के लिए तू अनफिट हो जाएगा।

ज्ञानी की आज्ञा की तुलना शास्त्रों से नहीं करनी चाहिए। ज्ञानी तो शास्त्रों के ऊपरी (बॉस) हैं। ज्ञान के भी ऊपरी हैं ज्ञानी। वे जो आज्ञा करें, उसी आज्ञानुसार चलना है

**दादा का राजीपा, आज्ञापालन से**

जो हमारी आज्ञा का जितना पालन करता है, उसे अवश्य ही हमारा उतना *राजीपा* (गुरुजनों की कृपा) मिलता है। अगर आपका निश्चय दृढ़ है कि 'ज्ञानी की आज्ञा में ही रहना है' तो उनकी कृपा से आज्ञा में ही रह पाओगे। आज्ञापालन करने पर आज्ञा की मस्ती रहती है।

**प्रश्नकर्ता :** आपकी कृपा हो तो आज्ञा में रहा जा सकता है और आज्ञा में रहने से कृपा मिलती है, तो इसमें सच क्या है?

**दादाश्री :** कृपा हो तो आज्ञापालन किया जा सकता है और आज्ञापालन करने से कृपा बढ़ती है।

**प्रश्नकर्ता :** पहले क्या आता है?

**दादाश्री :** राजी करना।

**प्रश्नकर्ता :** पाँच आज्ञा के पालन से *राजीपा* मिलता है?

**दादाश्री :** पाँच आज्ञा के पालन से तो मिलता ही है, नहीं तो उनके पास रहने से, उनकी सेवा करने से *राजीपा* मिलता है।

आप हमारी आज्ञा में रहते हो इसलिए मैं बहुत खुश हूँ। आज्ञा में नहीं रहने से दखल कर देता है। ज्ञानीपुरुष को राजी रखने से उत्तम इस दुनिया में अन्य कोई धर्म नहीं है और हमारा *राजीपा*

प्राप्त करना आपके ही हाथ में है। आप जैसे-जैसे हमारी आज्ञा में रह कर उच्च स्थिति में आते जाओगे, वैसे-वैसे आप पर हमारा *राजीपा* बढ़ता जाएगा।

**मन के अनुसार चलने से होता है बखेड़ा**

**प्रश्नकर्ता :** निश्चय किया हो कि दादा के पास रह कर काम निकाल लेना है, पाँच आज्ञा में रहना है लेकिन उसके बावजूद भी उसमें कमजोर पड़ जाते हैं, उसके लिए क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** लो! क्या करना चाहिए, मतलब? मन अगर कहे कि 'ऐसा करो' तो हमें जानना चाहिए कि यह अपने ध्येय से बाहर है, उल्टा है। दादाजी की कृपा कम हो जाएगी। इसलिए मन से कह देना कि, 'नहीं, इस प्रकार से ध्येय अनुसार करना है।' दादाजी की कृपा किस तरह से उतरेगी, वह जानने के बाद फिर हमें अपनी सेटिंग कर लेनी चाहिए।

अर्थात् मन के कहे अनुसार चलने से ये सभी झंझटें होती हैं। बहुत दिनों से कहा हुआ है इस भाई को। यही समझाता रहता हूँ। अर्थात् मन के कहे अनुसार नहीं चलना है, अपने ध्येय के अनुसार ही चलना चाहिए। वर्ना, वह तो जिस गाँव जाना है, उसके बजाय न जाने किस गाँव ले जाएगा! ध्येय अनुसार चलना ही पुरुषार्थ कहलाता है! मन के कहे अनुसार तो ये अंग्रेज-वंग्रेज भी चलते ही हैं न! इन सभी फॉरेनरों का मन कैसा होता है? सीधा होता है और अपना दखल वाला मन, उसमें कुछ न कुछ उल्टा रहता है! इसलिए हमें तो खुद अपने मन के स्वामी बनना पड़ेगा। अपना मन, ऐसा होना चाहिए अपने कहे अनुसार चले।

**प्रश्नकर्ता :** जब यह बात होती है न, तब पंद्रह-बीस दिनों तक तो उसी अनुसार चलता है। उसके बाद जब वापस ऐसा कुछ हो जाता है तो मन फिर से पलट जाता है।

**दादाश्री :** अगर पलट जाता है तो वह मन पलटता है। आप क्यों पलट जाते हो? आप तो वही के वही हो न!

**प्रश्नकर्ता :** वे आज्ञा भी फिर कई बार सहज हो जाती हैं।

**दादाश्री :** धीरे-धीरे सब सहज हो जाता है। जिसे पालन करना है, उसके लिए सहज हो जाता है। तब खुद का मन उसी में गुँथ जाता है। जिसे पालन करना है और जिसका निश्चय है, उसके लिए कोई मुश्किल है ही नहीं। यह तो उच्चतम विज्ञान है। इसमें निरंतर समाधि रहती है। कोई गाली दे फिर भी समाधि नहीं जाती, नुकसान हो जाए तब भी समाधि नहीं जाती, घर जलता हुआ देखे तब भी समाधि नहीं जाती।

**प्रश्नकर्ता :** प्रज्ञाशक्ति का इतना विकास होता है कि सभी आज्ञाएँ अंदर गुँथ जाती हैं?

**दादाश्री :** गुँथ जाती है। प्रज्ञाशक्ति पकड़ लेती है। ये पाँच आज्ञा, ये पाँच फन्डामेन्टल सेन्टेन्स हैं न, उनमें पूरे वर्ल्ड के सभी शास्त्रों का अर्क ही है!

**आज्ञापालन करने से मोक्ष, बाकी सब दखल**

हमारे लिए तो पाँच आज्ञा का पालन ही मोक्ष है। बाकी सब तो दखल कहलाता है। फिर अगर आज्ञापालन कम या ज्यादा हो तो उसमें हर्ज नहीं है लेकिन पाँच आज्ञा का *लक्ष* (जागृति) रहना चाहिए। जैसे कि अगर कोई रोड पर ड्राइविंग कर रहा हो, तब उसके *लक्ष* में रहता ही है कि ट्रैफिक के नियम क्या हैं! वर्ना, टकरा जाएगा। यहाँ का टकराव दिखाई देता है लेकिन वहाँ का टकराव नहीं दिखाई देता न! जबकि पूरा बरबाद हो चुका होता है! लोगों को उसका पता नहीं चलता।

**प्रश्नकर्ता :** आज्ञा चूके, उसका थर्मामीटर क्या है ?

**दादाश्री :** भीतर सफोकेशन, घबराहट वगैरह सब होता है, वह आज्ञा चूकने का ही परिणाम है। आज्ञापालन करने वालों को तो समाधि ही रहती है, निरंतर। जब तक आज्ञा है, तब तक समाधि है। अपने यहाँ ऐसे बहुत से लोग हैं, जो कि बहुत अच्छी तरह से आज्ञापालन करते हैं और समाधि में रहते हैं। क्योंकि ऐसा सरल और समभावी मार्ग है। साहजिक! और यदि यह अनुकूल नहीं आया तो फिर और कुछ तो कैसे अनुकूल आएगा? इसलिए मन की झंझटों में ध्यान ही नहीं देना है। सभी झंझटों को छोड़ कर सिर्फ ज्ञाता-ज्ञेय का ही संबंध रखो। मन अपने धर्म में है, उसमें दखल करने की क्या ज़रूरत है? निरंतर आज्ञा में ही रहा जा सके, समाधि में रहा जा सके ऐसा मार्ग है, यह। बिल्कुल भी कठिन नहीं है। आम वगैरह सब खाने की छूट है।

**पूर्व के दखल के कारण चूक जाते हैं आज्ञा**

**प्रश्नकर्ता :** आज्ञा कठिन नहीं हैं, उनका पालन करने का प्रयत्न तो करते हैं लेकिन फिर भी कितनी ही बार ऐसा लगता है कि आज्ञा में नहीं रह पाते।

**दादाश्री :** नहीं रह पाते है, लेकिन वह आपकी इच्छा है ही नहीं। नहीं रह पाते इसका मतलब किसी का दखल है। अब मैं क्या कहता हूँ कि इस संसार में आपमें दखल करने वाला कोई है ही नहीं लेकिन आपने पहले ये जो हस्ताक्षर किए हैं वे शोर मचाते हैं। उनका दखल है। हस्ताक्षर किए थे या नहीं, ज्ञान मिलने से पहले?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** वे आपके, खुद के ही उत्पन्न

किए हुए दखले हैं और वे ही दखल डालते हैं। उस दखल का अंत तो आना ही चाहिए।

आप सभी पुरुषार्थ के लिए तैयार ही हो। मैं जानता हूँ कि पुरुषार्थ कर सकते हो। फिर भी पुरुषार्थ नहीं हो पाता, उसका क्या कारण है? पहले जो हस्ताक्षर किए थे, करार किए थे, वे करार जब परिपक्व होते हैं तो वे सुबह आ कर खड़े हो जाते हैं, 'अरे! तू क्यों आया? अब मैं सुखी हूँ।' तब कहता है, 'नहीं, पहले आप हमारा हिसाब चुका दो, फिर सुखी रहो।'

**तरीका, दखल के निकाल का**

**प्रश्नकर्ता :** ऐसे तो बहुत से हिसाब चुकाने बाकी हैं। वह तो लंबा चलेगा।

**दादाश्री :** नहीं! ऐसा नहीं है कि लंबा चलेगा, उसका ऐसा नियम है। आम के पेड़ पर कितने आम लगते हैं? गिनने जाएँ तो उनका अंत ही न आए लेकिन आषाढ़ का महीना आते ही पेड़ पर एक भी आम नहीं रहता इसलिए डरना मत। इन आमों को देख कर डरना मत कि इन्हें कब तोड़ेंगे? कब गिनेंगे और कब खत्म होंगे? कुछ भी मत गिनना। उनका टाइमिंग होता है। इसलिए उस बारे में घबराना नहीं।

जब वह करार वाला आए तब कहना, 'आओ भाई, अब मुझे दादा मिल गए हैं, अब मुझे सभी करार पूरे कर देने हैं। अपना पेमेन्ट ले जाओ। और कुछ हो तो वे भी ले जाओ, चार लोग ही क्यों आए हों? रात के बारह बजे तक पेमेन्ट करूँगा, पर अब ले जाओ।' पेमेन्ट किए बगैर कोई चारा ही नहीं है। जिस कार्य को किए बगैर कोई चारा ही नहीं और जो दखल डालेगा तो पहले उस दखल करने वाले का *निकाल* करना चाहिए।

हमसे कहें कि, 'खाना खाने चलो, भूख लगी है न'? तब कहना, 'भाई, इन दखल वालों

का *निकाल* करने दो न, फिर आराम से खाना खाने बैठता हूँ।' इस प्रकार यह दखल निकल जाने के बाद वास्तविक पुरुषार्थ होगा।

जिस रास्ते से हमारा दखल निकल गया है न, वही रास्ता मैं आपको बता रहा हूँ। हमारा सभी दखल निकल चुका है, उन सभी को मैंने देखा है। इसलिए मैंने आपको यह रास्ता बताया है और आषाढ़ के महीने में आम नहीं दिखाई देता न पेड़ पर?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** क्यों, इतने सारे थे न? अरे, अभी बैसाख महीने तक दिखाई दे रहे थे, फिर नहीं रहते, समय हो जाने पर पेड़ पर नहीं रहते। उसे कोई वेदना नहीं होती कि नीचे गिर जाएँगे लेकिन एक भी ऊपर नहीं रहते। यदि कोई खाने वाला नहीं हो तो चिड़ियाँ खा लेती हैं लेकिन उसका निपटारा हो जाता है। इसलिए दखल के लिए घबराना मत। जब पेमेन्ट चुकाने का समय आए, तब उल्टा ऐसा कहना, 'आओ, जल्दी पेमेन्ट ले जाओ।' हम ने बल्कि जो करार किए हैं वे पूरे तो करने पड़ेंगे न? तू कहती है कि, 'मेरे साथ ऐसा हुआ, मेरी सास परेशान करती है।' अरे! सास के साथ ऐसा करार है तो उसे पूरा करो न! क्या सास परेशान करती है? यह तो करार ही ऐसा किया है। जैसे करार किए हैं, वे करार हमें पूरे तो करने पड़ेंगे न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** इसलिए जो करारी माल है, उसमें आपका शुद्ध उपयोग नहीं जाएगा। जैसे-जैसे समभाव से *निकाल* होगा, वैसे-वैसे संयम बढ़ता जाएगा। संयम को ही पुरुषार्थ कहा गया है और जैसे-जैसे संयम बढ़ता जाएगा, वैसे-वैसे जल्दी से उसका *निकाल* होता जाएगा। जल्दी *निकाल*

होने से संयम बढ़ता जाएगा। ऑटोमैटिक सब होते-होते केवलज्ञान पर आ जाएगा।

**आज्ञापालन का निश्चय ही करना है**

आपको कुछ भी नहीं करना है। 'दादा की आज्ञा का पालन करना है' और यदि आज्ञा का पालन नहीं हुआ तो उसकी भी चिंता नहीं करनी है। 'आज्ञापालन करना है' ऐसा दृढ़ निश्चय रखना है। उसके बाद आपको आज्ञापालन करना है। आप कहो कि, 'दादा, मेरी सास लड़ती है।' तो आपको सास दिखाई दे, उससे पहले ही मन में तय करना है 'फाइल आई है, दादा की आज्ञा से इसका 'समभाव से *निकाल* करना है' ऐसा निश्चय करना है और फिर अगर समभाव से *निकाल* नहीं हुआ तो उसके जिम्मेदार आप नहीं हो। आप आज्ञापालन करने के अधिकारी हो।

आप अपने निश्चय के अधिकारी हो, उस कार्य के अधिकारी आप नहीं हो। किस चीज़ के अधिकारी हो? आपका निश्चय होना चाहिए कि मुझे आज्ञा का पालन करना ही है, फिर पालन नहीं हो सके और एक धौल मार दी तो उसके लिए आपको खेद नहीं करना है। यदि धौल मार दी तो अगले दिन मुझ से पूछ लेना कि अब क्या करूँ? तब मैं आपको बताऊँगा कि 'प्रतिक्रमण करो, अतिक्रमण किया है इसलिए प्रतिक्रमण करना।' इतने सरल, सीधे और सुगम मार्ग को सिर्फ समझ ही लेना है। बहुत सरल रास्ता है यह।

**दखल नहीं, अब समभाव से निकाल**

दादा ने ज्ञान दिया, उसके बाद अब कोई भी चीज़ अपनी नहीं रही! बल्कि ये जो मन-वचन-काया थे, वे भी दादा को सौंप कर आ गए, तीन-तीन गठरियाँ सौंप दीं। अब यों देखने जाएँ तो दादा को सौंपने के बाद उनसे पूछे बगैर उनका

उपयोग कर ही नहीं सकते न! लेकिन हम ने छूट दे रखी है कि भाई! फाइलों का निकाल करना।

ये सभी फाइलें ही हैं। यह खाना आया, वह भी फाइल है। यह चाय आई, वह भी फाइल है। उनका समभाव से निकाल करना। 'मैं चाय नहीं पीता, मुझे ऐसा नहीं है और वैसा नहीं है....' ऐसा नहीं करना। अगर चाय नहीं पीता है तो उस कप को रख दे न, ताकि पता न चले किसी को! शोर क्यों मचाते हो? कहता है 'मैं चाय नहीं पीता न'! कितना बखेड़ा करता है, नहीं? दखल करता है!

### चारित्रमोह का समभाव से निकाल

गजब का मार्ग है यह! अतः झटपट इसके पीछे पड़ कर काम निकाल लेना है। हमें अभी दूसरी जो इच्छाएँ होने लगे न तो उन्हें जैसे-तैसे करके फीका कर देना है, वह सारा चारित्रमोह है। इच्छा वास्तव में मोह नहीं है, चारित्रमोह है। भगवान को भी चारित्रमोह था। जब घर छोड़ा न, तब से ले कर केवलज्ञान होने तक जो मोह था, वह सारा चारित्रमोह था। आप यदि पूरनपूड़ी (एक गुजराती व्यंजन) व जलेबी वगैरह खा रहे होंगे तो मैं आपको डाँटने नहीं आऊँगा। मैं जानता हूँ कि यह आपका चारित्रमोह है और आप उसका निकाल कर रहे हैं। फिर से नहीं आए, उस तरह से उसका समभाव से निकाल कर देना है। अब अभी जो मिले वह व्यवस्थित है, नहीं आया, वह भी व्यवस्थित। पूरनपूड़ी कच्ची आए, वह भी व्यवस्थित, अच्छी आए वह भी व्यवस्थित। सब व्यवस्थित है न?

वहाँ हम उस चारित्रमोह का समभाव से निकाल कर देते हैं, उसी को मुक्ति कहते हैं। और कुछ है ही नहीं। ऐसा सरल मोक्षमार्ग कभी सुना नहीं गया, इतना सरल व सुगम मार्ग है यह। त्याग नहीं करना है, कोई झंझट नहीं, बखेड़ा नहीं, दखल नहीं।

दखल सिर्फ देखने से ही चला जाता है

**प्रश्नकर्ता :** बाकी की सभी फाइलों का तो हम समभाव से निकाल करते हैं लेकिन इस फाइल नं-वन का समभाव से निकाल कैसे करें? वह विस्तारपूर्वक समझाइए क्योंकि सभी दखल फाइल नंबर वन का ही होता है।

**दादाश्री :** उस दखल को देखने से ही वह चला जाएगा, फाइल को देखने से ही। उल्टी हो या सीधी हो, उसे फाइल के साथ बहुत झंझट नहीं होती। वे 'देखने' से ही चली जाती हैं। अगर सामने वाली फाइल क्लेम करे तो उसका प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। इसमें तो क्लेम करने वाला कोई है नहीं न! इसलिए वे 'देखने' से ही चली जाएँगी। मन में खराब विचार आएँ, थोड़े उल्टे आएँ, बुद्धि खराब होने लगे, वह सब 'देखते' ही रहना है। जो भी कार्य करते हो उसमें हर्ज नहीं है। उन्हें 'देखते' ही रहना है। यह तो सुगम और सरल मोक्षमार्ग है, सब से सरल मोक्ष।

**प्रश्नकर्ता :** 'देखते' रहना अर्थात् उसके साथ सहमत नहीं होना है?

**दादाश्री :** सहमत तो होना ही नहीं है वहाँ पर। देखते रहो ना!

अब ज्ञान के बाद समभाव से निकाल करना है। वे पावर वाले सेल होते हैं न, वैसे ही ये मन-वचन-काया के तीन सेल ही हैं, ये जो सेल हैं, वे अपने आप ही उपयोग के बाद खत्म हो जाएँगे। आपको इनका समभाव से निकाल करना है तो वह क्लियर होता जाएगा। आप समभाव से निकाल करोगे तो वह क्लियर होता जाएगा और क्लियर होते-होते जब पावर खत्म हो जाएगा तो आप भी मुक्त और वे भी मुक्त।



## अवस्थाओं की आहुति रूपी महायज्ञ

समभाव से *निकाल* अर्थात् अवस्थाओं की आहुति देनी है। यह अंतिम महायज्ञ है।

अपना यह ज्ञान ऐसा है कि भीतर विचार आने पर जब अवस्था उत्पन्न होती है तब तुरंत ही उसकी आहुति दे दी जाती है क्योंकि वे खुद की अवस्थाओं के गुणहगार को ढूँढ ही निकालते हैं। प्रत्येक अवस्था की आहुति स्वाहा, यह अंतिम आध्यात्मिक यज्ञ है। स्वाहा अर्थात् संपूर्ण रूप से जला देते हैं। खुश हो कर अवस्था में तन्मयाकार होगा तो बखेड़ा हो जाएगा। उससे नई कल्पना करके नए बीज डालता है।

यदि वाणी की, मन की और काया की अवस्थाओं में निरंतर जागृत रह कर महायज्ञ में स्वाहा करता जाए तो आत्मा से वे जो पर्याय चिपके हुए हैं उनसे छूटता जाएगा और उतना ही वह परमात्म स्वरूप होता जाएगा।

## दखल गया तो छलकेगा आनंद

ये सारी फाइलें कम हो जाएँगी न, उसके बाद तो आनंद समाएगा नहीं। आनंद छलकेगा और पड़ोसियों को भी लाभ होगा क्योंकि जब कोई भी चीज़ छलकती है तब बाहर निकलती है। और जब बाहर निकलती है तब वह दूसरों के काम आती है इसलिए पड़ोसियों को भी लाभ होगा। अभी तो फाइलों का *निकाल* करने में ही आनंद नहीं आता। ये सारी दखलें, उस आनंद को चखने नहीं देती।

## खड़े रहना है ज्ञानपने के दरवाजे पर

इसलिए जो होता है उसे हमें देखते रहना है, लेकिन वह कैसे? ज्ञानपने के दरवाजे पर खड़े रहना है। जिसे लोग प्रज्ञा कहते हैं। प्रज्ञा अर्थात् क्या? ज्ञानपने का दरवाजा, जो यह होम (स्व)

है और यह फॉरेन (पर) है, उसे अलग दिखाती है। फॉरेन में जाते ही वह हमसे कहती है, 'फॉरेन में चले!' तब फिर वापस लौट कर हम प्रतिक्रमण कर लेते हैं कि अब नहीं। इस प्रकार अंत में तो वापस लौट ही आते हैं। 'फॉरेन में चले!' इस तरह से सावधान करती है या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** करती है।

**दादाश्री :** हाँ, तो हो गया। वह हमें सावधान करें और हम वापस लौट आएँ, ऐसा करते-करते ही उसका हल आ जाएगा। जो उपयोग 'पर' में चला जाता है, उसे वापस 'स्व' में ला दे, ऐसा करना है। बाकी, एक ही के पीछे नहीं पड़ना है!

अर्थात् यदि हमारा ज्ञान, ज्ञानपन के दरवाजे पर खड़ा रहे तो वहाँ यह ज्ञान सारा काम करता ही रहेगा। अन्य उपयोग में जाते ही सावधान करता है और यहाँ ज्ञानीपुरुष के पास तो दूसरे उपयोग में जाएगा ही नहीं। यहाँ तो चंदूभाई, चंदूभाई के कार्य करते हैं और आप अपना कार्य, दोनों कार्य करते रहते हैं। यहाँ तो अपने आप अलग ही रहता है। अन्य उपयोग में जाता ही नहीं। आपको शुद्ध उपयोग रखना नहीं पड़ता। यहाँ शुद्ध उपयोग रहता ही है। ज्ञानीपुरुष के पास सत्संग का फल है जिससे शुद्ध उपयोग में ही रहता है। बखेड़ा नहीं होने देता!

## शुद्ध उपयोग में नहीं होती दखलंदाज़ी

**प्रश्नकर्ता :** यहाँ आपके सान्निध्य में बैठे-बैठे मन में शक्तियाँ माँगें कि 'दादा, मुझे पाँच आज्ञा का निरंतर पालन करने की शक्ति दीजिए, उसे शुद्ध उपयोग कह सकते हैं क्या?

**दादाश्री :** शुद्ध उपयोग के नज़दीक का कहा जाएगा। वह शुद्ध उपयोग का सही साधन कहा जाएगा। शुद्ध उपयोग तो शुद्ध ही होता है न! तू कौन सी शक्ति माँगता रहता है? वे शुद्ध

उपयोग का साधन कहलाती है। इस साधन द्वारा हम शुद्ध उपयोग की ओर जा सकते हैं। शुद्ध उपयोग तो सिर्फ शुद्ध ही होता है। कुछ माँगना भी नहीं पड़ता न! त्याग करना या छोड़ना भी नहीं है। कोई दखलंदाजी होती ही नहीं, सिर्फ शुद्ध उपयोग ही। पूरे जगत् में शुभाशुभ उपयोग है जबकि यह शुद्ध उपयोग है। शुद्ध उपयोग रहे तो बखेड़ा ही नहीं रहेगा कोई। बिल्कुल भी बखेड़ा नहीं, उसमें सब आ जाता है। और दूसरा, हमारे वाक्य शुद्ध उपयोग करने के लिए हैं।

### अजागृति से होता है बखेड़ा

अपना ज्ञान तो कैसा है कि यदि कोई कहे कि 'आपने हमारी घड़ी चुरा ली,' तब कहेंगे कि, 'भाई, यदि आपको लगता है कि घड़ी चुराई है तो ठीक है।' हमें आत्मस्वरूप में रह कर जवाब देना है। फिर उस समय आप चंदूभाई बन जाओ तो दिया हुआ आत्मा वापस चला जाएगा। यानी कि अपने अक्रम विज्ञान में यह परेशानी है।

**प्रश्नकर्ता :** परेशानी होने के बावजूद भी उस समय जागृति बढ़ती जाती है। यह मार्ग जागृति बढ़ाने का ही है।

**दादाश्री :** हाँ, जागृति बढ़ जाती है। जागृति बहुत बढ़ जाती है लेकिन वास्तव में अभी ज़रा सी दखल हो जाए तो तुरंत स्वीकार लेता है। 'मैंने कहाँ चोरी की है?' अरे, रक्षण क्यों कर रहे हो? जो तेरा नहीं है, तू उसका रक्षण क्यों कर रहा है? जो तेरी बात ही नहीं है, तूझे उसका रक्षण करने की ज़रूरत ही नहीं है। यदि स्वीकार कर लेता है तो वह आपकी भूल कहलाएगी न? फिर उसे पता चल जाता है कि अपनी भूल हो गई। बाद में पता चलता है यानी उतनी जागृति तो है।

यह ज्ञान भी बहुत जागृति वाला दिया है लेकिन खुद जान-बूझ कर बखेड़ा करता है इसलिए

जागृति कम हो जाती है। अगर जागृति रहे, तब तो उस पर कोई असर ही नहीं होगा!

### दखलंदाजी को भी 'जानो'

**प्रश्नकर्ता :** दादा की आज्ञा का ठीक से पालन करने के बावजूद भी संसार में दखलंदाजी हो जाती है तो उसका क्या कारण है?

**दादाश्री :** वह तो हो ही जाएगी, उसे 'जानना' चाहिए। जानने की चीज़, वह ज्ञेय है। संसार में जो कुछ भी होता है वह ज्ञेय है और आप ज्ञाता हो। वह दृश्य है और आप दृष्टा हो। निज स्वभाव में रहना है।

**प्रश्नकर्ता :** हम शुद्धात्मा हैं, वह हम जानते हैं लेकिन यदि हमारी फाइल यह ज्ञान नहीं जानती और वह दखलंदाजी करे तो हमें क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** दखलंदाजी को 'देखते' रहना है। जो भी हो उसे 'देखते' रहना है। जो सहन करना पड़ता है, उसे 'देखते' रहना है। अपना ही हिसाब है सारा। किसी पराए इंसान का दखल नहीं है।

### दखल करने का भाव नहीं होना चाहिए

**प्रश्नकर्ता :** अब यदि घर में चार साल का बच्चा कोई गलत काम कर रहा हो तो हमें ऐसा लगता है कि 'उसमें समझ कम है तो चलो उसे टोकें या थोड़ा डाँटें,' हम से ऐसा हो जाता है, अपना बच्चा है इसलिए हमें ऐसा करना पड़ता है। तो क्या वह ठीक है या फिर वहाँ पर क्या करना है?

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन वह जो भी करे, वह हमें देखते रहना है।

**प्रश्नकर्ता :** कुछ भी नहीं कहना है?

**दादाश्री :** 'चंदूभाई!' उसे डाँटे, मारे तब

भी देखते ही रहना है और अगर बहुत मारे तब कहना कि 'भाई, इस तरह नहीं मारना चाहिए।'

**प्रश्नकर्ता :** अब, मारना नहीं है लेकिन क्या है, हम जानते हैं कि 'चंदूभाई' ही यह कर रहे हैं लेकिन वह जो अंदर उसकी क्रिया में वह जो दखल किया, वह योग्य है या अयोग्य ?

**दादाश्री :** सबकुछ करना। दखल, टोकना, डाँट-फटकार, सब करना लेकिन ऐसा भाव नहीं होना चाहिए कि दखल करना है। जो हो रहा है, उसे देखना है। दखल करना है, वैसा कर्तापना तो रहा ही नहीं न अब। कर्तापद ही नहीं रहा न अब। क्या हो रहा है उसे देखते रहना है। वह बखेड़ा कर दे, उसे भी देखना है और यह अच्छा करे उसे भी देखना है!

**प्रश्नकर्ता :** अंदर से ऐसा लगता है कि 'हमें ज्ञाता-दृष्टा रहना है, कुछ नहीं करना है' और बाहर ऐसा वर्तन हो जाता है कि सामने वाले को थप्पड़ लगा देते हैं।

**दादाश्री :** चंदूभाई क्या करते हैं उसे 'देखो' बाद में हमें कहना है कि 'चंदूभाई, ऐसा क्यों कर रहे हो ? इसके लिए प्रतिक्रमण करो' इतना कहना।

**प्रश्नकर्ता :** इतना कहने से उस तक पहुँच जाएगा क्या ?

**दादाश्री :** सब पहुँच जाएगा। टोकना ही है। चंदूभाई थोड़े ही अनपढ़ हैं ? सब जानते हैं लेकिन प्रकृति के अधीन ऐसा हो गया!

**दखल नहीं करना वह ज्ञान है, जो हो जाता है वह प्रकृति**

**प्रश्नकर्ता :** जब ऐसा होता है, तब हर बार अंदर से ऐसा विचार आता है कि यह गलत हो रहा है, ऐसा क्यों होता है ?

**दादाश्री :** गलत होता है या सही होता है, आपको उस झंझट में नहीं पड़ना है। चंदूभाई अपने आप वह करेंगे। चंदूभाई जो करते हैं, वह हमें 'देखते' रहना है। डिस्चार्ज मतलब जो भरा हुआ माल है वही निकल रहा है, गलन (खाली) हो रहा है। यानी आज का ज्ञान ऐसा कहता है कि दखल नहीं करना है। पूर्व कर्मों के आधार पर दखल हो जाता है अथवा उसके पक्ष में आ जाते हैं। उन दोनों के बीच घर्षण चलता रहता है। वह चलता ही रहेगा न! हमारा आज का ज्ञान यही कहता है कि हमें दखल नहीं करना है। वह तो आत्मा का विभाग है और दखल हो जाता है वह चंदूभाई (फाइल नं-वन) ही करते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** अतः उसे हमें ऐसे झाड़ देना है कि हमें उससे कोई लेना-देना नहीं है ?

**दादाश्री :** लेना-देना नहीं है और हमें उसका ज्ञाता-दृष्टा रहना है। किसी को ज्यादा परेशान करे और किसी को दुःख हो जाए तो हमें कहना है, कि 'आप क्यों बिना वजह ऐसा करते हो ? अब और कितने दिन बंधन में रहना है ?' ऐसा सब कह कर छोड़ देना है। उस पर चिढ़ना नहीं है। उस पर चिढ़ने का क्या मतलब ? प्रकृति, जिसमें पंप मार कर चेतन भरा है, उसमें क्या खोज रहे हो ? और अगर हो जाए तो उसे डाँटने से क्या होगा ?

**प्रश्नकर्ता :** तो, अंदर ऐसा रहता है कि दखल नहीं करना है। आज का ज्ञान ऐसा दिखाता है और...

**दादाश्री :** 'दखल नहीं करना है,' वह आज का ज्ञान कहता है। ज्ञान अर्थात् आत्मा। यह जो आत्मा प्राप्त हुआ है। दखल नहीं करना, वह ज्ञान है। दखल हो जाता है, वह प्रकृति है, वह अज्ञान है। जो दखल होता है उसे आत्मा 'देखता' है, बस। ज्ञाता-दृष्टा भाव में आ गया है वह। वह भूल

को जानता है तो वह आत्मा है। खुद की भूल को देखे और जाने, उसे आत्मा कहते हैं। दखल हो गया, वह भूल है। उसे आप देखोगे तो वह भूल चली जाएगी। भूल को 'देखे' बगैर, 'जाने' बगैर वह जाएगी नहीं। वह पकड़ में आनी चाहिए। 'दीठा नहीं निजदोष तो तरीए कोण उपाय?' आपको तो सभी दोष दिखाई देते हैं न?

**प्रश्नकर्ता :** दिखाई देते हैं।

**दादाश्री :** सभी दिखाई देते हैं न? उसे ही विज्ञान कहते हैं। कोई भी विज्ञान ऐसा नहीं है जो कि खुद के दोष दिखाए।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, वह तो सूक्ष्म से सूक्ष्म दोष दिखाता है।

**दादाश्री :** सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, छोटे से छोटा। अंदर प्रतिक्रमण भी शुरू करवा देता है!

**फाइल वन को देखना ही है पुरुषार्थ**

**प्रश्नकर्ता :** दादा, यह जो दखल हो जाता है वह व्यवस्थित के अधीन है न?

**दादाश्री :** जो 'हो गया' वह भाग व्यवस्थित के अधीन है लेकिन जो होगा वह व्यवस्थित के अधीन नहीं है। जो हो गया, उसकी चिंता नहीं करनी है। उसके लिए प्रतिक्रमण करना है। गलत हो जाए उसके लिए और जिसने किया है उसे कहना है कि 'प्रतिक्रमण कर।' चंदूभाई ने किया तो चंदूभाई से कहना है कि 'तू प्रतिक्रमण कर।'

**प्रश्नकर्ता :** हम व्यवस्थित को सौंप देते हैं फिर हमें क्या पुरुषार्थ करना है?

**दादाश्री :** पुरुषार्थ तो, ये 'चंदूभाई' क्या करते हैं उसे हमें देखते रहना है, वह अपना पुरुषार्थ। चंदूभाई का पुतला क्या करता रहता है, पूरे दिन उसे देखते रहना, वही पुरुषार्थ!

उसे देखते समय क्या बीच में ऐसा कर सकते हैं कि, 'क्यों चंदूभाई, आप बेटे के प्रति इतना कठोर क्यों हो गए?' आप प्रतिक्रमण करो। आपने अतिक्रमण किया है इसलिए प्रतिक्रमण करो। बीच-बीच में ऐसा कर सकते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** प्रतिक्रमण तो फिर हो ही जाता है।

**दादाश्री :** प्रतिक्रमण हो जाता है, वही कहता हूँ न! साथ में प्रतिक्रमण हो ही जाते हैं, अपने आप हो जाते हैं इसलिए उसे देखते ही रहना है। प्रतिक्रमण हो रहा है, उसे हमें देखते रहना है।

**दखल नहीं, 'देखना' है सिर्फ**

**प्रश्नकर्ता :** जब ऐसे अवसर आते हैं, तब अज्ञानता खड़ी हो जाती है और उसका असर भी होता है। तब यदि ज्ञान की स्थिति में रहना हो तो वह कैसे संभव है?

**दादाश्री :** वह तो, चंदूभाई उसमें रहेंगे, आप इसमें रहना। अगर आप भीतर अलग रहोगे तो कुछ टच (असर) नहीं होगा। वह नहीं सुधरेगा। जो जमा हुआ माल है, क्या वह सुधर जाएगा? उसे देखते रहना तो छूट जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** वह तो जो चंदूभाई का है, वह डिस्चार्ज होता रहेगा।

**दादाश्री :** वह पुद्गल (जो पूरण-गलन होता है) है उसका धर्म अलग है। आत्मा का धर्म अलग है। दोनों का कोई लेना-देना नहीं है। किसी और के धर्म में दखल कैसे कर सकते हैं? उसे सिर्फ 'देखना' है कि पुद्गल इस भाव में घूम रहा है। जिसे 'देखना' आ गया, उसका सब गया। उदयकर्म में हाथ नहीं डालेगा तो काम हो जाएगा! और अगर हाथ डाल दिया है तो पछतावा

करके तुरंत उसे छोड़ दे तो वह ज्ञान के नजदीक ही है, तो भी उसका काम हो जाएगा।

**नहीं करना है, उदयकर्म में दखल**

हमें उदयकर्म में दखल नहीं करना है। कोई थप्पड़ मार रहा हो तो आपको ऐसा नहीं कहना है कि 'तू क्यों मार रहा है? और क्यों मार रहा है, वह कहने का अधिकार चंदूभाई को है लेकिन आपको नहीं है। चंदूभाई भी उदयकर्म के अधीन बोलते हैं। आपको ज्ञाता-दृष्टा रहना है, समझना तो पड़ेगा न? वीतराग मार्ग में गप्प नहीं चलती! अन्य मार्ग में चल जाती है गप्प। यह तो बहुत काता (जाँचा-परखा) हुआ है, बहुत बारीकी से कात कर रेग्युलर स्टेज में रखा गया है और फिर केवलज्ञान में 'देख कर' बताते हैं। यों ही एक अक्षर भी नहीं कहते। समझ में आए ऐसी बात है न?

**प्रश्नकर्ता :** यह उदयकर्म है, ऐसा भी जब पूर्ण जागृति होगी तभी समझ में आएगा।

**दादाश्री :** हाँ! नहीं तो उदयकर्म को भी नहीं समझता। कितनी ज़्यादा जागृति रहे तब समझ में आता है कि यह उदयकर्म है। थोड़ी बहुत जागृति तो रहती है, महात्माओं को। यह ज्ञान तो हैं न! ज्ञान हो गया। अब सिर्फ केवलज्ञान होना ही बाकी रहा।

**प्रश्नकर्ता :** केवलज्ञान होने में क्या बाकी रहा?

**दादाश्री :** अभी भी कहाँ-कहाँ बुद्धि का दखल है, उसे 'देख' लेना है। अर्थात् बुद्धि का दखल चंदूभाई करें, उसमें हर्ज नहीं है। हमें सिर्फ उस दखल में एकाकार नहीं होना है। यदि हम 'देखते हैं,' तब हम अपने हिसाब में है और अगर उसमें हिसाब चूक गए तो उसे उदयकर्म में दखल करना कहा जाएगा। चंदूभाई का उदयकर्म

है लेकिन आप उसमें एकाकार हो जाओ ऐसा नहीं होना चाहिए तब आप पर असर नहीं होगा।

**ज्ञाता-दृष्टा के अलावा सभी दखलंदाजी**

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर, उसका अर्थ ऐसा हुआ कि जहाँ ज्ञाता-दृष्टापना नहीं रहे, वहाँ दखलंदाजी है?

**दादाश्री :** हाँ! ज्ञाता-दृष्टा के अलावा सब दखलंदाजी, उसी को संसार कहते हैं! लेकिन अब यह वास्तविकता है कि ज्ञाता-दृष्टा तो नहीं रह पाते भाई, मनुष्य की इतनी शक्ति नहीं है। बाकी, जो ज्ञाता-दृष्टा रहा, वह भगवान ही बन जाएगा। लेकिन तब तक क्या करना चाहिए? तो भीतर जब दखल करने का विचार आए, उस समय प्रतिक्रमण कर लेना, तब फिर वह दखल नहीं रहेगा और जो दखल हुआ था, उसे हम ने मोड़ लिया।

**प्रश्नकर्ता :** यह तो बहुत उच्च बात कर दी लेकिन हर समय इंसान 'देखता' रहे, उसे ऐसा नहीं रह सकता न?

**दादाश्री :** नहीं रह सकता तो फिर उसे प्रतिक्रमण करना है। आपको जो विचार आते हैं न, उनका प्रतिक्रमण करना है। एकजैक्ट ज्ञाता-दृष्टा न रह पाएँ तो प्रतिक्रमण करना है। 'इतनी तेज गाड़ी क्यों चला रहे हो?' यदि ऐसा कहा जाए तो फिर हमें प्रतिक्रमण कर लेना है कि 'यह हम से भूल हो गई।'।

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, इंसान को दखलंदाजी करने का विचार नहीं आता लेकिन हो ही जाती है।

**दादाश्री :** हाँ, हो ही जाती है। नहीं होती ऐसा नहीं है लेकिन हो ही जाती है। अर्थात् दखलंदाजी करता है, वहीं झंझट है न और उसी के कारण यह संसार कायम है।

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञाता-दृष्टा रहने के बाद तो प्रतिक्रमण करने की जो बात है उसका कोई मतलब ही नहीं है न?

**दादाश्री :** प्रतिक्रमण तो किसे करना है? हमें खुद नहीं करना है। अपना यह अक्रम विज्ञान है न, इसलिए कषाय जरा भारी होते हैं। अब किसी को डाँटा तो ऐसा डाँटा कि उसे दुःख हुआ इसलिए 'आपको' चंदूभाई से कहना है कि, 'भाई, आपने अतिक्रमण क्यों किया? इसलिए प्रतिक्रमण करो।' 'हमें', यानी शुद्धात्मा को प्रतिक्रमण नहीं करना है।

**प्रश्नकर्ता :** हमें तो ज्ञाता-दृष्टा ही रहना है और उसे प्रतिक्रमण करना है। अर्थात् ज्ञाता-दृष्टा तो आत्मा का स्वभाव है और प्रतिक्रमण पुद्गल को करना है।

**दादाश्री :** अतिक्रमण पुद्गल का और प्रतिक्रमण भी पुद्गल का ही है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, वह यदि समझ में आ जाए तो फिर उलझन नहीं रहती।

### पुद्गल की करामात में क्या दखल करना

**दादाश्री :** ओर्गेनाइजिंग भी पुद्गल का है, और फिर करामातें भी पुद्गल की हैं। तो फिर तू क्यों अपने पर लेता है? उसमें क्या दखल करना? दखल करने से बखेड़ा हो जाता है।

सभी क्रियाओं के ज्ञातादृष्टा रहोगे तो सभी क्रियाएँ गलन स्वरूप हैं। बुरी आदतें और अच्छी आदतें सभी गलन ही हैं। पूरा पुद्गल पूरण-गलन होता रहता है, उसे देखते ही रहो, उसमें दखल मत करो। भीतर हाथ डालने जाओगे तो उसमें खिंच जाओगे इसलिए देखते ही रहो। इस पूरण-गलन को जिसने जान लिया, वह ज्ञाता-दृष्टा परमानंदी है। वह आत्मा ही परमात्मा है।

यह जो पुद्गल है, वह दखल करता है। लड़ाई-झगड़ा करता है। आत्मा को ऐसा कुछ भी नहीं है। यह ज्ञान मिलने के बाद समझ में आता है कि आत्मा वीतराग है तो यह पुद्गल क्यों लड़ाई-झगड़ा करता है? वह हमारी मनमानी नहीं करता, इच्छा होने पर भी नहीं करता। ऐसा होता है न? किसलिए? यह पुद्गल अर्थात् उसका पूर्व कर्म का उदय, बस उदय की पोटली है यह। ऐसा कुछ उदय आता है और प्रकट होता है, उदय आता है और प्रकट होता है उसमें वह अज्ञानी व्यक्ति अहंकार करता है कि 'मैं कर रहा हूँ यह।' वह नहीं कर रहा है, यह कर्म ही करते रहते हैं। यह शरीर-वरीर वगैरह सब उसके उदय के अधीन है। अर्थात् हाथ-वाथ चलाना उसके अधीन है। बुद्धि, मन-वन वगैरह सभी पुद्गल के अधीन। एक अहंकार वह भी उसके अधीन है लेकिन दूसरा नया अहंकार वह फिर से खड़ा करता है, कि यह 'मैं कर रहा हूँ'। उसे ऐसा जो लगता है, वह भ्रान्ति है उससे कर्म बंधते हैं और फिर उन कर्मों से दुनिया चलती है। हमारे ज्ञान देने के बाद वह कर्तापना का अहंकार तुरंत चला जाता है, फिर भोक्तापना का अहंकार रहता है। तब यह लड़ाई कौन करता है? यह पुद्गल करता है। उसे हमें 'देखते' रहना है। यह और यह, दोनों पुद्गल क्या कर रहे हैं, लड़ाई-झगड़ा कर रहे हैं, या जो भी कर रहे हैं, उसे हमें 'देखते' रहना है। वर्ना फिर दूसरे कर्म बंध जाएँगे।

### दखल किए बगैर देखो पुद्गल को

आत्मा का स्वभाव है, ऊर्ध्वगमन में जाना, मोक्ष में जाना, स्वभाव से ही वह ऊर्ध्वगामी है। पुद्गल का स्वभाव ही है कि वह नीचे खींचता है।

एक सूखे कद्दू पर शक्कर की तीन इंच की 'कोटिंग' करके उसे समुद्र में डाल दें तो वह वज्र होने की वजह से पहले तो वह डूब

जाएगा। फिर जैसे-जैसे शक्कर घुलती जाएगी, वैसे-वैसे वह धीरे-धीरे ऊपर आता जाएगा। इस प्रकार ये सब परिणाम निरंतर पिघलते ही रहते हैं और आगे बढ़ते जाते हैं। हम जो कुछ भी दखल करते हैं, उससे फिर नया उत्पन्न होता है। जैसे कि परमाणुओं की परतें जितनी अधिक होंगी, उतना ही नीचे की गति में जाते हैं और कम परतों वाला उच्च गति में जाते हैं। और जब परमाणु मात्र का भी आवरण नहीं रहता तब मोक्ष में जाते हैं।

यह पुद्गल क्या कहता है कि 'आप तो शुद्धात्मा हो गए तो ऐसा मत मानना कि आप छूट गए। आपने मुझे बिगाड़ा था इसलिए आप ही मुझे शुद्ध कीजिए तो आप भी मुक्त और हम भी मुक्त'। तब कहेंगे, 'किस तरह से आपको मुक्त करना है?' तब वह कहता है कि 'हम जो कुछ भी करें, उसे आपको देखना है और कोई दखल नहीं करना है। राग-द्वेष रहित देखा करो'।

**दखलंदाजी नहीं हो तो क्लियर होता ही जाएगा**

**प्रश्नकर्ता :** यह पूरा साईन्स पुद्गल को शुद्ध करने के लिए ही है न? ये आज्ञा रूपी जो पाँच वाक्य हैं या यह सारा जो विज्ञान है न, वह पुद्गल को शुद्ध करने के लिए ही है न? आत्मा को कोई लेना-देना नहीं है।

**दादाश्री :** मूल रूप से तो पुद्गल को शुद्ध करने की भी हमें ज़रूरत नहीं है। हम यदि, अपनी जो शुद्ध दशा है, उसमें अशुद्धि नहीं मानें तो पुद्गल तो शुद्ध हो ही जाएगा। पुद्गल तो अपने आप ही शुद्ध होता ही रहेगा।

अगर पुद्गल में दखलंदाजी नहीं हो न तो वह तो साफ होता ही रहेगा लेकिन यह दखलंदाजी करता है। दखल करता है, फिर बखेड़ा हो जाता है, दखलंदाजी कौन करता है? अज्ञान मान्यताएँ।

**प्रश्नकर्ता :** सभी पुद्गल परमाणुओं को क्लियर करना पड़ेगा न! तभी मोक्ष होगा न?

**दादाश्री :** वह तो हो ही जाएगा। हम शुद्ध हो कर अपने घर में बैठ जाएँगे तो वह अपने आप ही क्लियर हो जाएगा। अगर कुछ और करने जाएँगे तो नहीं होगा। दरवाजे बंद करके बैठ गए तब फिर अपने आप बाहर चले जाएँगे। सुबह पूरा तूफान खत्म हो कर शांत हो चुका होगा। यदि उसमें भाग लिया तो बिगड़ेगा। इसलिए हमें कुछ नहीं करना है। जैसे मरने के लिए कुछ भी नहीं करना पड़ता, उसी तरह कुछ भी नहीं करना पड़ता। अपने घर में सो जाएँगे तो फिर निकाल हो जाएगा।

इफेक्ट में हाथ ही मत डालना। मन-वचन-काया तो सिर्फ इफेक्ट हैं। उनका क्या करना? इसलिए कुछ करने की ज़रूरत ही नहीं न!

**डिस्चार्ज में दखल करने से नहीं होगा भला**

ये मन, वाणी और वर्तन जो 'डिस्चार्ज' होते ही रहते हैं, उन्हें अब सिर्फ देखते ही रहना है। 'डिस्चार्ज' अपनी सत्ता में नहीं है। वहाँ पर अगर हम दखल करने जाएँगे तो उससे कुछ भी फायदा नहीं होगा। 'हमें' तो यही देखते रहना है कि 'चंदूभाई' क्या कर रहे हैं। भगवान महावीर सिर्फ यही करते थे। जो खुद का पुद्गल था, उसमें क्या चल रहा है, वही देखते रहते थे। एक पुद्गल को ही देखते थे, अन्य कुछ भी नहीं देखते थे। कैसे समझदार थे वे! जिनकी बात करते ही आनंद होता है।

**देखना है, मुर्दे को हो रहे असर को। तो नहीं रहेगा दखल**

भगवान महावीर एक पुद्गल को देखा करते थे। पुद्गल अर्थात् मुर्दे को। ये सब मुर्दे (मृत)



ही हैं, उन्हीं को देखते रहते थे। कोई गाली दे, वह भी मुर्दा है और सुनने वाला भी मुर्दा है। जो चिढ़ता है, वह भी मुर्दा है और जो नहीं चिढ़ता, वह भी मुर्दा है।

अर्थात् यह मुर्दा क्या कर रहा है, हमें वह देखते रहना है। अकुलाहट होती है तो उस मुर्दे को, खुशी होती है तो वह भी मुर्दे को, किसी पर खुश हो जाता है तो वह भी मुर्दे का ही है और किसी को तमाचा मार देता है तो वह भी मुर्दे का ही है। एक बार मुर्दे को जान लिया फिर दखल नहीं रहेगा। वह तो कहता है, 'मुझे ऐसा होता है।' 'अरे भाई, लेकिन भले ही हो न, वह तो मुर्दे को होता है।' तू तो उसका जानकार है। तू अलग है और यह मुर्दा अलग।'

जो उदय रूपी है उसमें दखल मत करना। उस उदय को जानो, अपना ज्ञान ऐसा कहता है। अर्थात् जो उदय है चंदूभाई उसी में तन्मयाकार रहता है, 'आपको' जानना है। जो उसका उदय है उसमें आगे-पीछे कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है।

**तन्मयाकार हो जाए तो उसे भी जानना है**

भीतर अंतःकरण तन्मयाकार हो रहा है, उसे हमें 'जानना' पड़ेगा और 'देखना' भी पड़ेगा न? भीतर अंतःकरण तन्मयाकार नहीं होगा तो कोई कार्य ही नहीं हो सकता। तन्मयाकार तो होना ही चाहिए न?

यहाँ पर आने के लिए जब हम गाड़ी से निकलते हैं तब सबकुछ तन्मयाकार ही रहता है न लेकिन हम 'देखते हैं' और 'जानते हैं'। हम अलग रह कर काम करते हैं। आपसे इतना सब काम नहीं होगा लेकिन आपको लक्ष (जागृति) रहता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' कभी लक्ष को भूल जाए

तो प्रतीति रहती है। बाकी, अंदर सब चलता ही रहता है। हमें 'देखते' रहना है।

**प्रश्नकर्ता :** विचार आए और फिर उसमें तन्मयाकार हो जाए। चित्त फोटो दिखाए, वह तन्मयाकार दशा कहलाती है न?

**दादाश्री :** लेकिन वह है तो डिस्चार्ज न, उसमें हर्ज नहीं है। जब से हम ने वह 'जाना,' तभी से हम मुक्त और वह मुक्त। 'जानने वाला' मुक्त ही होता है। 'करने वाला' झंझट वाला होता है। हम तो मुक्त ही हैं।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा ही रहता है कि यह सब चंदूभाई ही कर रहे हैं। पहले उदय में तन्मयाकार हो जाते थे, उसके बजाय अब हम अपने उदय को 'देखते' हैं कि मेरा ऐसा उदय आया।

**दादाश्री :** अब, सभी उदय को 'देखना,' है, उसी को अक्रम कहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** हम जब 'देखना' चूक जाएँ तभी बुद्धि दखलदाजी करती है न?

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन जहाँ चूक जाते हो, सभी 'देखते' हो न? तो उसमें हर्ज नहीं है। इससे तो अभी हमारा केवलज्ञान रुका हुआ है, और कुछ नहीं। ये सभी छोटी-छोटी चीजें ही केवलज्ञान को रोकती हैं।

**दखल को जानें तो मुक्त**

**प्रश्नकर्ता :** इसमें दो बातें हुई। चंदूभाई की बुद्धि दखल करती है तो वह दखल करे और 'मैं' उसे 'जानता' हूँ।

**दादाश्री :** यदि आप 'जानो' तब आप मुक्त और चंदूभाई भी मुक्त। यदि आप 'जानो' तो दोनों मुक्त हो और नहीं 'जानो' तो दोनों बंधे हुए हो।

**प्रश्नकर्ता :** क्योंकि फिर बुद्धि के दखल का कोई अर्थ ही नहीं रहा।

**दादाश्री :** कोई अर्थ नहीं रहा। यहाँ पर बुद्धि के अर्थ की कोई कीमत ही नहीं है। इसका उदयकर्म ही इसे देता है और उसके उदयकर्म से वह लेता है। इसने अपने उदयकर्म से इसे पाँच लाख रुपए उधार दिए और उसने अपने उदयकर्म से लिए फिर उसमें दखल करने का रहा ही कहाँ? अब, देने वाले का जब लौटाने का उदयकर्म आएगा तो वह देगा और लेने वाले का लेने का उदयकर्म होगा तो लेगा, वर्ना नहीं लेगा।

**प्रश्नकर्ता :** तो बहीखाता नहीं लिखेंगे तो भी चलेगा।

**दादाश्री :** बहीखाता लिखने की ज़रूरत ही कहाँ रहती है? ये सभी सूक्ष्म बातें हैं। तीर्थकरों के घर की बातें हैं ये सब!

**प्रश्नकर्ता :** आपने कहा हूँ न कि आप इसे 'जानो' तो चंदूभाई भी मुक्त और आप भी मुक्त, वे दोनों मुक्त। यह समझ में नहीं आया?

**दादाश्री :** इसमें क्या समझ में नहीं आया? चंदूभाई अलग हो गए तो खुद मुक्त ही है। वे तो उदयकर्म के अधीन हैं। उदयकर्म के अधीन में ज़िम्मेदारी नहीं रहती।

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, उसमें कुछ गड़बड़ हो रही है। वे उदयकर्म के अधीन हैं तो वे कौन? जो उदयकर्म के अधीन हैं, वे कौन?

**दादाश्री :** वे चंदूभाई हैं।

**अजागृति ही दखल है**

**प्रश्नकर्ता :** 'चंदूभाई' उदयकर्म के अधीन हैं और 'खुद' जानने वाला है।

**दादाश्री :** हाँ, वह खुद या उसकी प्रज्ञा ही!

**प्रश्नकर्ता :** अब यदि प्रज्ञाशक्ति खुद जानकार है, तो वह दखल नहीं करेगी न?

**दादाश्री :** यदि उदयकर्म के अधीन हो तो दखल तो चंदूभाई करता है और उसमें यदि उसे प्रज्ञाशक्ति की जागृति न रहे तो वह एकाकार हो जाता है। जागृति न रहे तो उस समय उसमें दखल हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** प्रज्ञा एकाकार हो जाती है क्या?

**दादाश्री :** नहीं, प्रज्ञा एकाकार नहीं होती। प्रज्ञा तो अपना काम करती रहती है लेकिन यदि जागृति न रहे तो दखल हो जाता है। हमें पता भी चलता है कि यह दखल हो गया।

**प्रश्नकर्ता :** प्रज्ञा यदि जागृति में नहीं रहती तो चंदूभाई के साथ एकाकार कौन हो जाता है? चंदूभाई के दखल में कौन एकाकार हो जाता है?

**दादाश्री :** अजागृति। अर्थात् बोलना नहीं, और मौन रहना, उसी को दखल कहते हैं। 'देखा-जाना' नहीं, उसी को मौन रहना कहते हैं। 'अजागृति' को ही दखल कहते हैं। और कौन एकाकार होगा? उसे फिर मिटास भी लगती है। उसी को एकाकार होना कहा जाएगा न!

**प्रश्नकर्ता :** मिटास किसे लगती है?

**दादाश्री :** यह इसका जो डिस्चार्ज अहंकार है न, उसे। अब यदि वहाँ पर 'देखने वाला' रहता तो दोनों मुक्त हो जाते। इसका जो हिसाब बाकी रहा, वह अगले जन्म की जमापूँजी रही, शेष रहा और तीर्थकर निःशेष होते हैं। जो शेष बचा है उसे फिर भागाकार करना पड़ेगा। शेष बाकी नहीं रहे, वैसा होना चाहिए।

**दखल करने का यह स्वभाव अपना नहीं है**

**प्रश्नकर्ता :** उदयकर्म और चंदूभाई वे दोनों

अलग है? क्योंकि आपने कहा न कि चंदूभाई उदयकर्म में दखल करेंगे लेकिन हमें उसमें एकाकार नहीं होना है।

**दादाश्री :** चंदूभाई तो दखल करेंगे। वह तो, अज्ञानता का तो उदयकर्म में दखल करने का स्वभाव ही है। चंदूभाई अर्थात् अज्ञानता और उसका स्वभाव ही है दखल करना। लेकिन यदि हम ने उसे 'जाना' तो दोनों ही छूट गए। 'जाना' नहीं अर्थात् मौन रहे इसलिए उसमें हस्ताक्षर हो गए!

**प्रश्नकर्ता :** हम तन्मय हो गए, अर्थात् उसमें एकाकार हो गए और मौन रहे मतलब तो उसमें एकाकार हो गए। ऐसा?

**दादाश्री :** अरे, कोई डाँटता है तो भी पता नहीं चलता कि मैं यह गलत कर रहा हूँ। बोलो, इस तरह से कितने बड़े-बड़े उदयकर्म चले जाते होंगे!

**दखल करने वाले को भी जुदा 'देखो-जानो'**

**प्रश्नकर्ता :** उदयकर्म में जब दखल हो रहा हो, उस समय मौन रहे तो हस्ताक्षर हो गए। इस तरह से वहाँ मौन नहीं रहना चाहिए, क्या?

**दादाश्री :** उदयकर्म में जैसा है वैसा होने दो न! कुछ करना तो रहा नहीं है, अब 'जानना' बाकी बचा है। मौन अर्थात् क्या? जब उदयकर्म आमने-सामने लड़ रहे हों, तब उसे आपने 'देखा' नहीं और मौन रहे। उपयोग में नहीं रहे इसलिए प्रमाद में गया। मौन रहना ही प्रमाद है। आपको अगले जन्म के लिए जमापूँजी भी चाहिए न! सबकुछ खर्च कर देंगे तो कैसे चलेगा?

**प्रश्नकर्ता :** और यदि वहाँ मौन नहीं रहे, तो क्या होगा?

**दादाश्री :** दोनों मुक्त हो जाएँगे। चंदूभाई

किसी से दखल कर रहा हो, उसे आपने 'देखा' और 'जाना', तो आप भी मुक्त और चंदूभाई भी मुक्त। फिर चंदूभाई को कर्म बंधन का कोई कारण नहीं रहा और आपको भी नहीं रहा।

**प्रश्नकर्ता :** जब मौन नहीं रहता तब क्या होता है? जिसे आप 'जागृति' कहते हैं, उसका विलोम शब्द क्या है?

**दादाश्री :** जागृति! अजागृति को 'मौन' कहते हैं, हम। जागृति नहीं रहे, उसे प्रमाद कहते हैं। जागृति अर्थात् अप्रमत्त।

**खुद की जगह छोड़ने से ही होता है दखल**

जो निर्मल आत्मा आपको दिया है, वह कभी भी तन्मयाकार नहीं होता है। फिर भी आपको समझ नहीं होने के कारण खुद का व्यक्तित्व छोड़ने से ही दखल होने पर बखेड़ा हो जाता है। 'जगह' छोड़ने से ही बखेड़ा होता है। 'खुद का स्थान' नहीं छोड़ना चाहिए। 'खुद का स्थान' छोड़ने से कितना नुकसान होता है कि उसे 'खुद का सुख' नहीं आता और दखल जैसा लगता है...जबकि 'हमारा' दिया हुआ आत्मा, जरा सा भी इधर-उधर नहीं होता, वह तो वैसे का वैसे ही रहता है, प्रतीति के रूप में!

अभी अगर किसी कसाई को मैं ज्ञान दूँ और वह ज्ञान में रहे और आत्मदृष्टि से सब 'देखता,' ही रहे, दूसरे में दखल नहीं करे, मेरी आज्ञा में रहे तो वह मोक्ष में जाएगा। कसाई की क्रिया बाधक नहीं है, 'मैं कर रहा हूँ' वह बाधक है। इस जन्म में चाहे कुछ भी हो जाए लेकिन आप उसे 'देखते' ही रहो और आज्ञा में रहो तो यह ज्ञान ऐसा है कि एक जन्म में मोक्ष में जा सकते हैं!

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाइट्स

**22-30 दिसम्बर :** दादानगर-अडालज के लिए पूज्यश्री दीपकभाई की निश्रा में 8 दिनों के लिए सत्संग पारायण का आयोजन हुआ। जिसमें आप्तवाणी 13 (उ.) ग्रंथ का वाचन हुआ और पूज्यश्री द्वारा उसका विस्तृत रूप से विवरण किया गया। दस हज़ार से भी अधिक महात्माओं ने इस पारायण का लाभ उठाया। राग-द्वेष, वीतरागता, पुद्गल, ज्ञान-अज्ञान जैसे टॉपिक्स पर सत्संग व प्रश्नोत्तरी हुए। इस कार्यक्रम में समग्र भारत के विविध राज्यों व विदेशों से भी महात्मा आए थे। सत्संग के अलावा सामायिक व गरबा का भी आयोजन हुआ। क्रिसमस के दिन विदेशी महात्माओं ने क्रिसमस गीत प्रस्तुत किया। पूज्यश्री द्वारा ज्ञान से संबंधित सुंदर विवरण से, उपस्थित सभी महात्माओं को आनंद की अनुभूति हुई। पारायण के दौरान पूज्यश्री द्वारा पाँच आज्ञा की विस्तृत समझ देती हुई सीडी 'मुक्ति के पंथ', 'आरती' पर हुई पारायण की डीवीडी, दादाश्री की ज्ञानवाणी भाग-31, बच्चों के लिए 'सीमंधर स्वामी का जीवन चरित्र', पज़ल गेम व बंगाली भाषा में अनुवादित पुस्तक 'मैं कौन हूँ?' का विमोचन हुआ।

**31 दिसम्बर :** दादानगर-अडालज के लिए पूज्यश्री द्वारा श्री सीमंधर स्वामी की 1100 से भी अधिक मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा विधि हुई। पूज्यश्री ने प्रत्येक मूर्तियों के दर्शन करके, एक घंटे तक भावप्रतिष्ठा की उस दौरान महात्माओं ने सामूहिक विधि और प्रार्थना की। प्रतिष्ठा के लिए जिन महात्माओं की मूर्ति थी, उन्होंने प्रक्षाल-पूजन व आरती की। अंत में महात्माओं ने मूर्तियों को सिर पर रख कर गरबा किए और जैसे साक्षात् भगवान की चेतना उतर आई हो, महात्माओं को ऐसी दिव्य अनुभूति हुई।

**2 जनवरी :** परम पूज्य दादाश्री की 30वीं पुण्यतिथि पर अडालज त्रिमंदिर में महात्माओं द्वारा सुबह एक घंटे के लिए सामूहिक कीर्तन भक्ति और प्रार्थना व विधि हुई। पूज्यश्री ने मंदिर आ कर सभी भगवानों के दर्शन किए और परम पूज्य दादाश्री की मूर्ति का पूजन और आरती की। शाम को दादानगर हॉल में परम पूज्य दादाश्री के जीवन चरित्र पर 'ज्ञानीपुरुष' ग्रंथ के प्रथम भाग का विमोचन का विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। GNC के बच्चों द्वारा त्रिमंत्र और भक्तिपद पर नृत्य प्रस्तुत किया गया। दादाश्री के जीवन घटनाओं की झलक देती हुई सुंदर नाटिका भी युवा कलाकारों द्वारा प्रस्तुत हुई। उसके बाद पूज्यश्री द्वारा पुस्तक का विमोचन हुआ। आप्तसंकुल के भाईओं ने पूज्यश्री को पालकी में बैठा कर पूरे हॉल में घुमाया। पूज्यश्री ने ज्ञानीपुरुष के जीवन की विशेषता का वर्णन करते हुए कहा कि उनके जीवन में भी हमारे जैसी सामान्य घटना घटी थी लेकिन उन्होंने असामान्य तरीके से विचारणा करके उन घटनाओं का तारण निकाल कर अनुभव लेते गए और 1958 में आत्मज्ञान प्रकट हुआ। बचपन से ही दादाश्री की समझ बहुत उच्च प्रकार की और असामान्य थी। परिणाम के तौर पर लाखों लोगों के आत्यंतिक सुख के निमित्त बने। गरबे के दौरान नज़दीक से पूज्यश्री के दर्शन से महात्माओं में नया जोश भर गया और दादा के प्रति अनन्य भक्ति में अनेक गुना बढ़ोतरी हुई सभी को ऐसा अनुभव हुआ। रात में विशेष भक्ति के दौरान प्रोफेशनल गायकों ने भक्तिपद गाए। महात्माओं ने दादाई भक्ति का भरपूर आनंद उठाया। पूज्यश्री ने महात्माओं के साथ भोजनशाला में भोजन ग्रहण किया था।

**6-7 जनवरी :** दादानगर-अडालज में आयोजित सत्संग और ज्ञानविधि में गुजरात के अलावा महाराष्ट्र और अन्य राज्यों से भी मुमुक्षु आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए आए थे। 1800 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। प्रश्नोत्तरी के दौरान बहुत सारे हिन्दी भाषी मुमुक्षुओं ने अपनी ज्ञान की प्यास बुझाने के लिए विविध प्रश्न पूछे थे।

**8-10 जनवरी :** कडी में 13 साल के लंबे अरसे के बाद, पूज्यश्री के ज्ञानविधि का आयोजन हुआ और एक महीने से, आसपास के गाँवों में प्रचार-प्रसार, आप्तपुत्र सत्संग, प्रोजेक्टर शो और घरों में जा कर कार्यक्रम की जानकारी दी गई। ज्ञानविधि में धारणा से भी ज्यादा मुमुक्षुओं की उपस्थिति रही। 2100 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। ज्ञानविधि से पहले और बाद में आप्तपुत्र सत्संग में भी मुमुक्षुओं की उपस्थिति अधिक रही।

## दादावाणी

### पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'साधना' टीवी पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-गिरनार हर रोज पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
  - ✦ 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह 3 से 3-30 तथा शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)
- USA-Canada**
- ✦ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
  - ✦ 'SAB-US' पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 EST
- UK**
- ✦ 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
  - ✦ 'SAB-UK' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
  - ✦ 'Rishtey-UK' पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
- Singapore**
- ✦ 'SAB- International' पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)
- Australia**
- ✦ 'SAB- International' पर हर रोज सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)
- New Zealand**
- ✦ 'SAB- International' पर हर रोज दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

### पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'दूरदर्शन'-नेशनल पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
  - ✦ 'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 5 से 5-30 (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश पर सोम से शनि रात 8-30 से 9 (हिन्दी में)
  - ✦ 'उड़ीसा प्लस' टीवी पर सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
  - ✦ 'दूरदर्शन' गिरनार पर हर रोज रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
  - ✦ 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात 8 से 9 (गुजराती में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-चंदना पर सोम से शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)
- USA -Canada**
- ✦ 'Rishtey-USA' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) EST
- UK**
- ✦ 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
- Singapore**
- ✦ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- Australia**
- ✦ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)
- New Zealand**
- ✦ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)
- CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE** ✦ 'Rishtey-Asia' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) UAE Time (9am-9-30am IST)
- USA-UK-Africa-Aus.** ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, गोधरा : 9723707738, अंजार : 9924346622, मोरबी : (02822)297097, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557  
 अन्य सेन्ट्रों के संपर्क : अहमदाबाद : (079) 27540408, मुंबई : 9323528901, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830093230  
 यु.एस.ए.-केनेडा : +1 877-505-DADA (3232), यु.के. : +44 330-111-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया : +61 421127947

अडालज त्रिमंदिर मे PMHT ( पेन्ट्स महात्मा ) शिविर

9-13 मई ( बुध - रवि ) - सत्संग समय की घोषणा बाकी

सूचना : 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। 2) इस शिविर में 'मा-बाप बच्चों का व्यवहार', 'पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार' तथा 'पैसों का व्यवहार' टोपिक पर पूज्यश्री दीपकभाई द्वारा सत्संग होगा तथा आप्तपुत्र भाईयों तथा आप्तपुत्री बहनों द्वारा ग्रुप सत्संग किए जाएंगे। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। अगर आपके मोबाइल में FMकी सुविधा है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर ही सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकेंगे। 3) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज्दिकी सेन्टर में और अगर नज्दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के फोन नं. (079) 39830400 (सुबह 9-30 से 12 तथा दोपहर 3 से 6) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

<b>नागपुर</b>	दिनांक : 24 मार्च	समय : शाम 6-30 से 8-30	संपर्क : 9970059233
	स्थल : श्री कच्छी विशा ओशवाल भवन, अनाथ विद्यार्थी गृह, लकडगंज, नागपुर.		
<b>अमरावती</b>	दिनांक : 25 मार्च	समय : शाम 5 से 7-30	संपर्क : 9422335982
	स्थल : दादा भगवान सत्संग केन्द्र, अंबुजा सीमेंट ऑफिस, कॉर्पोरेशन बैंक के निचे, राजापेट, अमरावती.		
<b>दरियापुर</b>	दिनांक : 27 मार्च	समय : सुबह 10 से 12-30	संपर्क : 8766516497
	स्थल : शेतकरी सदन, अकोट रोड, बनोसा, दरियापुर.		
<b>अकोला</b>	दिनांक : 28 मार्च	समय : शाम 4-30 से 6-30	संपर्क : 9422403002
	स्थल : ऑफिसर क्लब, सिविल लाइन, एस. ए. कोलेज के सामने, अकोला.		
<b>जलगाँव</b>	दिनांक : 29 मार्च	समय : शाम 5 से 7-30	संपर्क : 8806869874
	स्थल : ओमकार रिसोर्ट्स, DSP चौक, HDFC बैंक के पास, महाबल रोड, जलगाँव.		
<b>शिरपुर</b>	दिनांक : 30 मार्च	समय : सुबह 10 से 12-30	संपर्क : 8856962916
	स्थल : वराचे गांव, श्री वेंकटेश बालाजी मंदिर, जोशी गली, सिद्धार्थ नगर, शिरपुर.		
<b>औरंगाबाद</b>	दिनांक : 31 मार्च	समय : शाम 5-30 से 7-30	संपर्क : 8308008897
	स्थल : प्लाट नंबर-74, N3, CIDCO, हाईकोर्ट के पास, जालना रोड, औरंगाबाद.		
<b>नासिक</b>	दिनांक : 1 अप्रैल	समय एवं स्थल की जानकारी हेतु	संपर्क : 9325074635

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा ? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यू कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महीने 15वीं तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पिनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं., पूरा नाम-पता, पिनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabagwan.org इ-मेल आइडी पर इ-मेल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

#### बेलगाम

20 फरवरी (मंगल) शाम 5 से 8 - सत्संग (टोपिक-ज्ञानी की शरण भव का भय मिटाये)

21 फरवरी (बुध) शाम 4-30 से 8 - ज्ञानविधि

स्थल : मराठा मंदिर सांस्कृतिक भवन, रेल्वे ओवर ब्रीज के पास, बेलगाम ( कर्णाटक ).

संपर्क : 8971668468

22 फरवरी (गुरु) शाम 5 से 8 - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : श्री जिवेश्वर भवन, मेईन रोड, वडगाँव, बेलगाम ( कर्णाटक ).

संपर्क : 8971668468

#### अहमदाबाद

3 मार्च (शनि) शाम 7-30 से 10-30 - सत्संग (टोपिक-परोपकार, सेवा-मानवधर्म)

4 मार्च (रवि) शाम 5 से 8-30 - ज्ञानविधि

5 मार्च (सोम) शाम 7-30 से 10-30 - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : The A.E.S. ग्राउन्ड, टी.वी. टावर के पीछे, बोडकदेव, अहमदाबाद (गुजरात).

संपर्क : 9824688399

#### अडालज त्रिमंदिर

17 मार्च (शनि), शाम 4 से 7 - सत्संग तथा 18 मार्च (रवि), सुबह 10 से 12 - मुमुक्षुओं के लिए आप्तपुत्र सत्संग

18 मार्च (रवि), शाम 4 से 7-30 - ज्ञानविधि

19 मार्च (सोम), पू. नीरू माँ की 12वीं पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम

नोट - कार्यक्रम में भाग लेने हेतु अपने नजदिकी सेन्टर में और अगर नजदिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के फोन नं. (079) 39830400 (सुबह 9-30 से 12 तथा दोपहर 3 से 6) पर दि. 7 मार्च 2018 तक अपना रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

### Puja Deepakbhai's UK - Germany Satsang Schedule (2018)

Contact no. for all centers in UK + 44-330-111-DADA (3232), email: info@uk.dadabagwan.org

Date	From	to	Event	Venue
06-Apr-18	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	Shree Prajapati Association, Ulverscroft Road, Leicester, LE4 6BY
07-Apr-18	10:30 AM	12:30 PM	PMHT Satsang with Aptputra	
07-Apr-18	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
08-Apr-18	10:30 AM	12:30 PM	Aptputra Satsang	
08-Apr-18	03:00 PM	07:30 PM	GNAN VIDHI	Birmingham Pragati Mandal, 10 Sampson Road, Sparbrook, Birmingham, B11 1JL
09-Apr-18	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
10-Apr-18	10:30 AM	12:30 PM	Aptputra Satsang	
10-Apr-18	06:00 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	Harrow Leisure Centre, Christchurch Avenue, Harrow, HA3 5BD
13-Apr-18	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
14-Apr-18	10:30 AM	12:30 PM	PMHT Satsang with Aptputra	
14-Apr-18	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
15-Apr-18	10:30 AM	12:30 PM	Aptputra Satsang	
15-Apr-18	03:00 PM	07:30 PM	GNAN VIDHI	
16-Apr-18	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	Willingen, Germany Contact : +49 700 32327474 (0700-dadashri)
20-Apr-18	All day		Akram Vignan Event	
21-Apr-18				
22-Apr-18				



## वास्तव में है 'व्यवस्थित' के अधीन लेकिन बुद्धि करवाती है दखल

कोई ड्राइवर कार ड्राइविंग कर रहा हो और सामने से बस आ जाए तब पास में बैठा हुआ आदमी यदि उसका हाथ पकड़ ले तो क्या होगा? अरे भाई, टकरा जाएगा! लेकिन लोग बड़े समझदार होते हैं, सामने से बस आ रही हो तब स्टियरिंग नहीं पकड़ते, क्योंकि उन्हें मालूम है कि स्टियरिंग चलाने वाले के हाथ में है। जिसका काम है वही करता है। इसमें मोटर जैसे स्थूल मामलों में तो लोग समझते हैं, लेकिन यह 'अंदर' की बात को कैसे समझेंगे? वे 'खुद' दखल दे ही देते हैं, इसलिए झमेला हो जाता है। जैसे इसमें ड्राइवर पर सब छोड़ देता है, वैसे ही यदि 'अंदर' के मामले में भी समझ जाए तो कोई भी दखलंदाजी नहीं होगी। कोई आपके बेटे को फँसा रहा हो तो आपकी बुद्धि आपसे दखलंदाजी करवाती है। वास्तव में तो 'व्यवस्थित' ही सब करता है फिर भी बुद्धि दखल करवा देती है। पहले मन, बुद्धि को फोन करता है तब खुद अंदर दखल दे सकता है। हर बात में पहले बुद्धि की दखल रहती है।

- दादाश्री

